रवींद्रनाथ टैगोर

भारत का मार्ग दर्शक

क्र. ५४८ | रु. १०

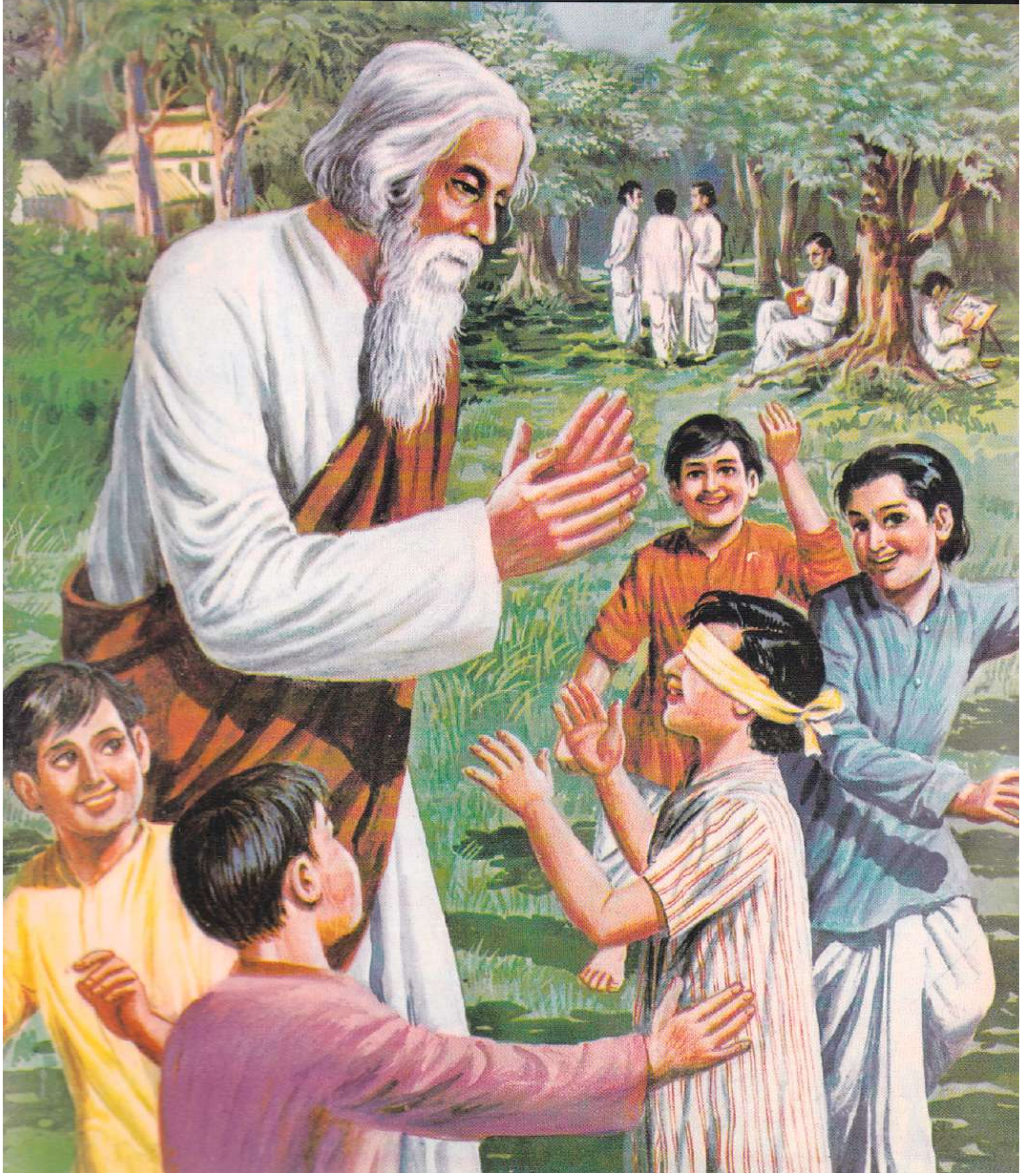

तलाश अपनी जड़ों की

जब वे मुड़ कर अपने बचपन के उन दिनों की ओर देखते हैं, जब उनके व्यक्तित्त्व का विकास हो रहा था, तब अनेक भारतीय बड़े स्नेह से अमर चित्र कथा की उन सचित्र पुस्तकों को याद करते हैं, जिन्होंने उनके जीवन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह एसीके – अमरचित्र कथा ही थीं जिन्होंने उन्हें अपनी भव्य विरासत की पहली झलक दिखलाई थी।

अमर चित्र कथा १९६७ में पेश की गयीं। इस समय चुनने के लिए अमर चित्र कथा की ४०० से ज़्यादा पुस्तकें उपलब्ध हैं। संसारभर में इनकी १० करोड़ से ज्यादा प्रतियां बिक चुकी हैं।

अब अमर चित्र कथा की पुस्तकें और भी बड़े पैमाने पर उपलब्ध हैं – भारतभर में १०००+ पुस्तक विक्रेताओं के पास। अपने नज़दीकी विक्रेता का पता जानने के लिए यहां लॉग ऑन करें : www.ack-media.com. अगर किसी पुस्तक विक्रेता तक पहुंचना आसान न हो तो आप सभी पुस्तकें हमारे ऑनलाइन स्टोर www.amarchitrakatha.com से खरीद सकते हैं। हम संसारभर में हर जगह पुस्तकें बड़ी जल्दी पहुंचा देते हैं।

हमारे पुस्तकों के भंडार में से आपको अपनी मनपसंद पुस्तक चुनने में आसानी हो, इसके लिए हमने पुस्तकों को छः वर्गों में विभाजित किया है।

महाकाव्य और पौराणिककथाएँ
महाकाव्यों एवं पुराणों की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ

भारतीय उत्कृष्ठ साहित्य
भारतीय साहित्य की मनमोहक कहानियाँ

हास–परिहास और दंतकथाएँ
सदाबहार लोक कथाएं, दंत कथाएं तथा विवेक और हास्य से भरी कहानियाँ

वीरांगना
वीर पुरुषों तथा महिलाओं की मन छूने वाली कहानियाँ

दिव्यदृष्टा
विचारकों, समाज सुधारकों तथा राष्ट्र निर्माताओं की प्रेरक कहानियाँ

समकालीन साहित्य
भारतीय समकालीन साहित्य की उत्कृष्ठ कहानियाँ

कथा कयनक्षा बॅनर्जी

चित्र सौरेन रॉय

संपादक अनंत पै

Amar Chitra Katha Pvt Ltd
© Amar Chitra Katha Pvt Ltd, 1971, Reprinted June 2022
ISBN 978-93-90055-66-1
Published by Amar Chitra Katha Pvt. Ltd., 204, 2nd Floor,
Dhantak Plaza, Makwana Road, Gamdevi, Marol, Andheri - 400059, India
For Consumer Complaints Contact Tel : + 91-2249188881/2
Email: customerservice@ack-media.com

This book is sold subject to the condition that the publication may not be reproduced, stored in a retrieval system (including but not limited to computers, disks, external drives, electronic or digital devices, e-readers, websites), or transmitted in any form or by any means (including but not limited to cyclostyling, photocopying, docutech or other reprographic reproductions, mechanical, recording, electronic, digital versions) without the prior written permission of the publisher, nor be otherwise circulated in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition being imposed on the subsequent purchaser.

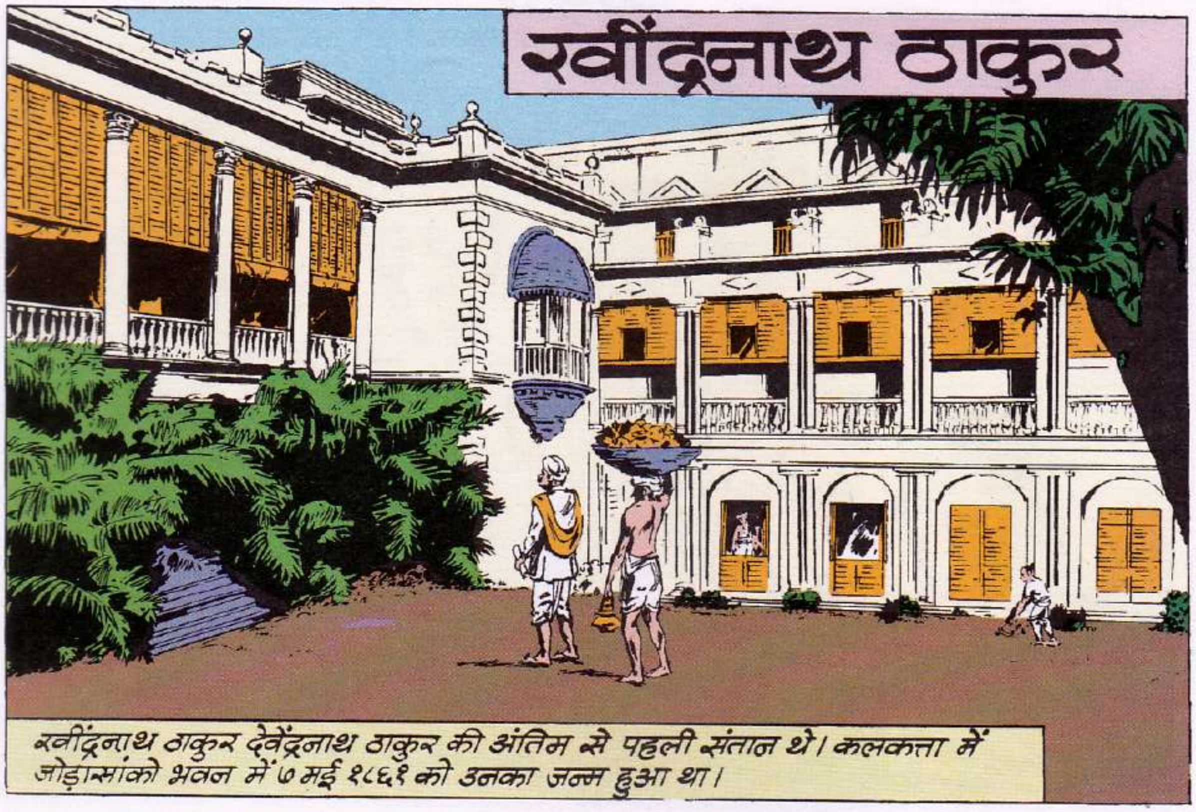
रवींद्रनाथ ठाकुर
रवींद्रनाथ ठाकुर देवेंद्रनाथ ठाकुर की अंतिम से पहली संतान थे। कलकत्ता में जोड़ासांको भवन में ७ मई १८६१ को उनका जन्म हुआ था।

रवींद्रनाथ के जन्म के बाद उनके पिता काम-काज के कारण ज़्यादातर बाहर रहने लगे।

माता शारदा देवी को इतने बड़े परिवार का ध्यान रखना पड़ता था। बालक की अच्छी तरह देख-भाल करना उनके लिए कठिन था।
ईश्वर, रवि को ले जा कर खिलाओ।
आओ, बच्चा।

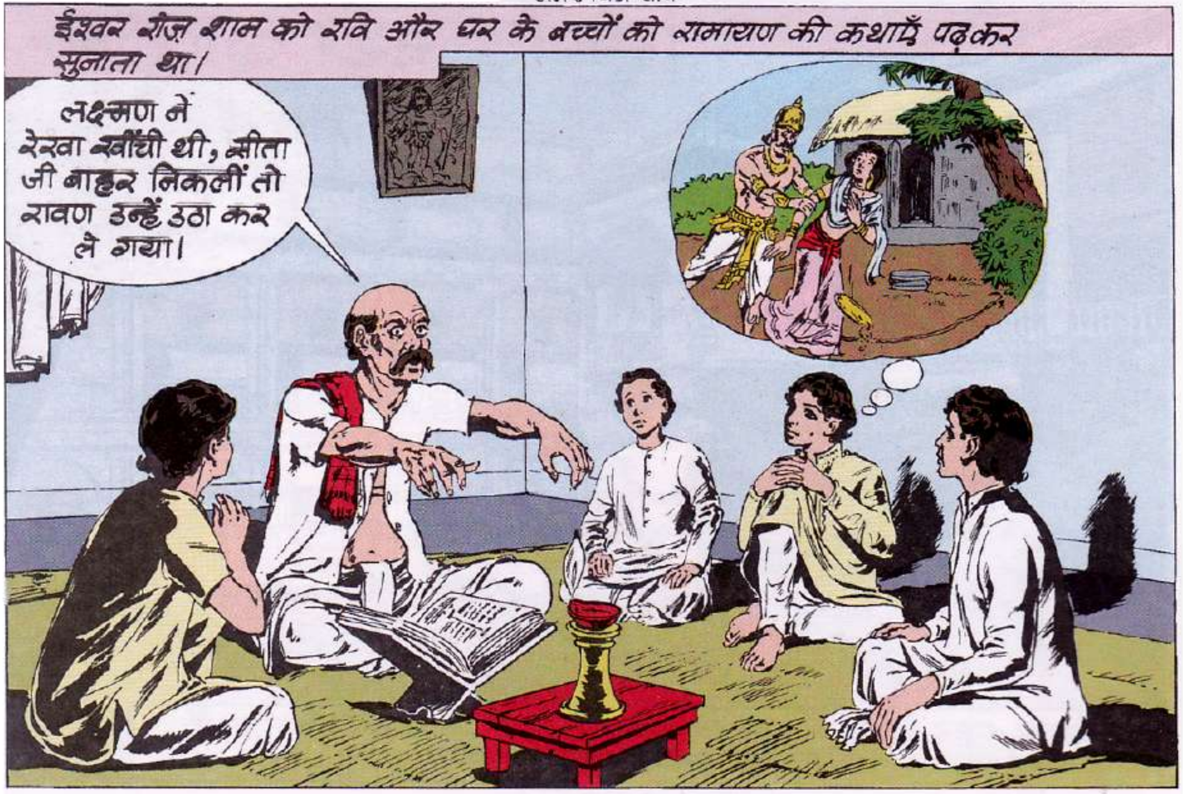
ईश्वर रोज़ शाम को रवि और घर के बच्चों को रामायण की कथाएँ पढ़कर सुनाता था।
लक्ष्मण ने रेखा खींची थी, सीता जी बाहर निकलीं तो रावण उन्हें उठा कर ले गया।

घर का दूसरा नौकर, श्याम अपने ही ढंग से रवि को काबू में रखता था।
मुझे बहुत काम करना है। तुम इस घेरे से मत निकलना।

रवि की इच्छा बाहर निकलने की होती भी तो वे डर के मारे ऐसा न कर पाते थे।

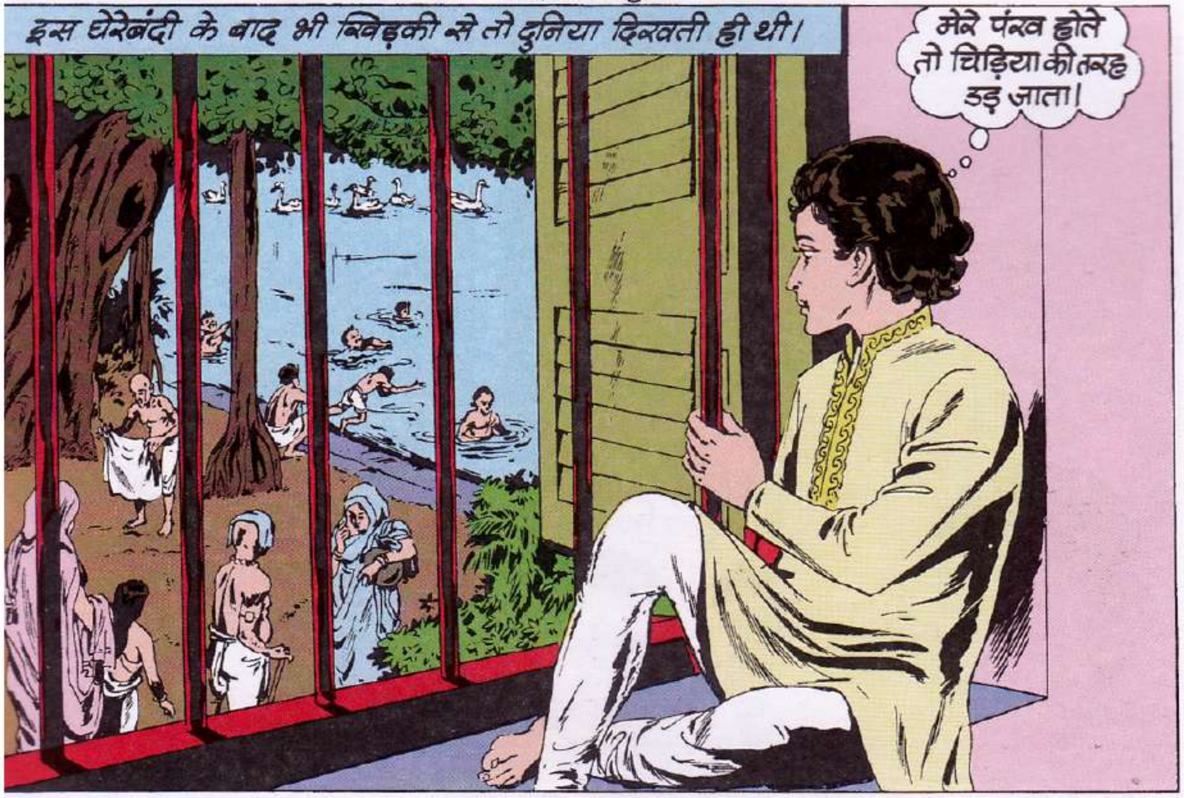
इस घेरेबंदी के बाद भी खिड़की से तो दुनिया दिखती ही थी।
मेरे पंख होते तो चिड़िया की तरह उड़ जाता!

कल्पनाशील रवि को पढ़ाई नीरस ही लगती थी।
मूर्खों, मेरे साथ पाठ करो—

दूसरे बालक तो मशीन की तरह पाठ किया करते पर रवि कल्पना के पंखों पर उड़ने लगते।
शत्रु मेरे सामने है। मेरे पास हथियार नहीं हैं पर मेरे सिखाये हुए कुत्ते, शेर और बाघ मेरी ओर से लड़ रहे हैं। और जीत मेरी हुई! मैं नायक हूँ!

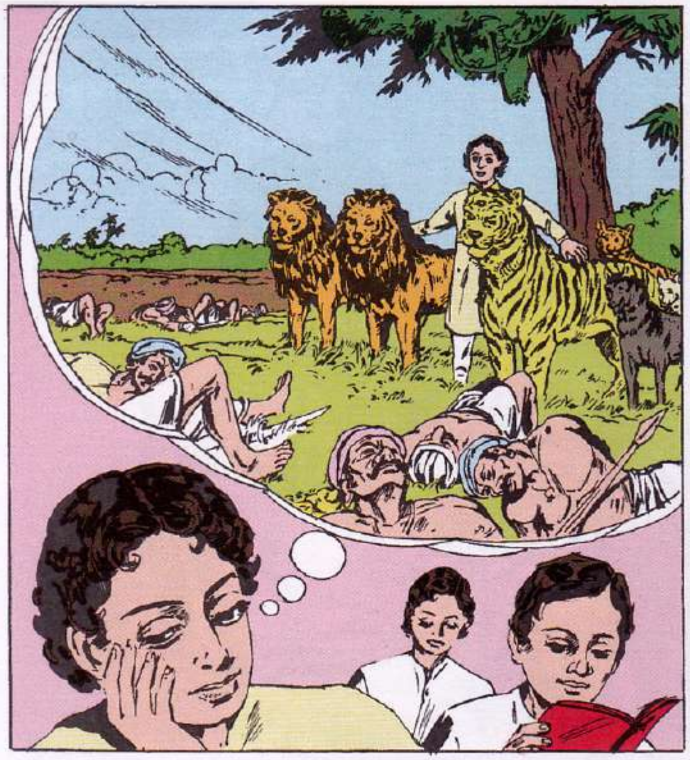

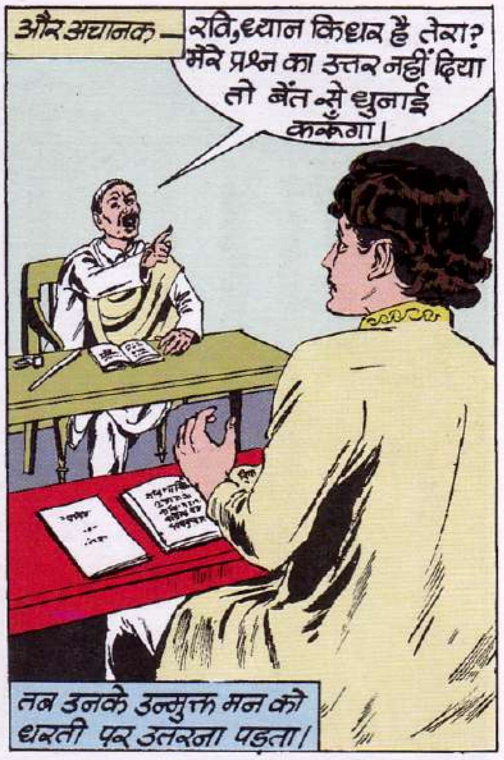

घर में उनका मन पाठशाला के बारे में उड़ान भरा करता। वे अपने को शिक्षक और बारजे की लकड़ियों को छात्र समझते।

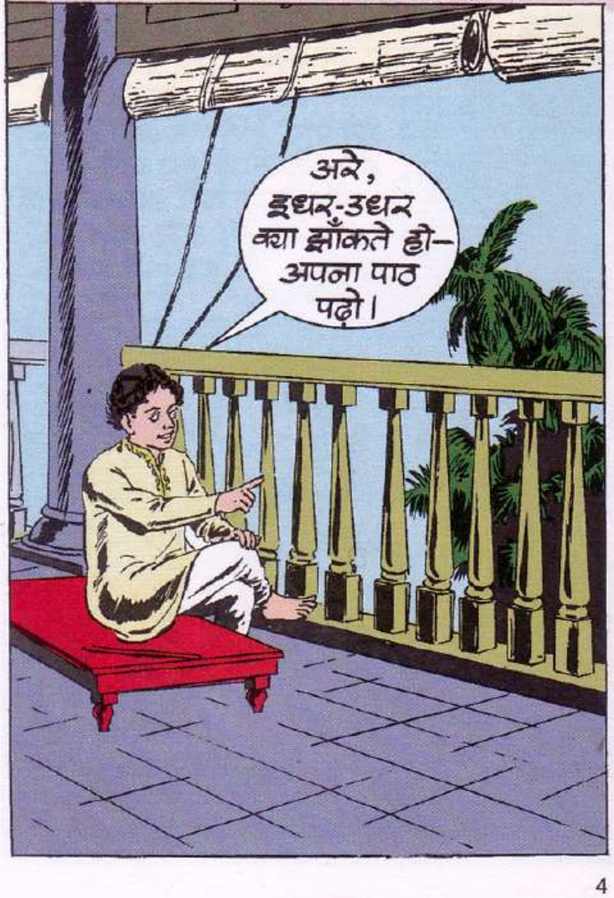

शाम को अघोर बाबू, जो खुद डाक्टरी पढ़ रहे थे, रवि और दूसरे बच्चों को अंग्रेज़ी पढ़ाने आते थे। अघोर बाबू भले आदमी थे। पर उन्हें पढ़ाने का समय शाम को ही मिलता था और पढ़ाते भी वे अंग्रेज़ी। एक दिन—
ऐसी बरसात में अघोर बाबू नहीं आयेंगे!
आज तो छुट्टी मिली! खेलो-कूदो – मौज करो।
छुट्टी कैसी! वे आ भी गये।
रवि ने काली छतरी दूर से देख ली थी। बरसात अघोर बाबू को रोक नहीं पायी।
किंतु एक दिन—
भारतीय और गोरी चमड़ी के लड़कों की लड़ाई में अघोर बाबू घायल हो गये।
अब तो वे नहीं आ सकते!
आज खेलने को मिलेगा।
पर यह आज़ादी बहुत दिन नहीं रही। अघोर जल्दी ठीक हो गये। उनका अच्छा हो जाना बच्चों को अच्छा नहीं लगा।
रवि के एक संबंधी को उनसे बड़ा स्नेह हो गया था। वे एक दिन रवि से बोले —
रवि, तुम कविता किया करो।
क्या कहते हैं? कविता करूँ? कैसे?

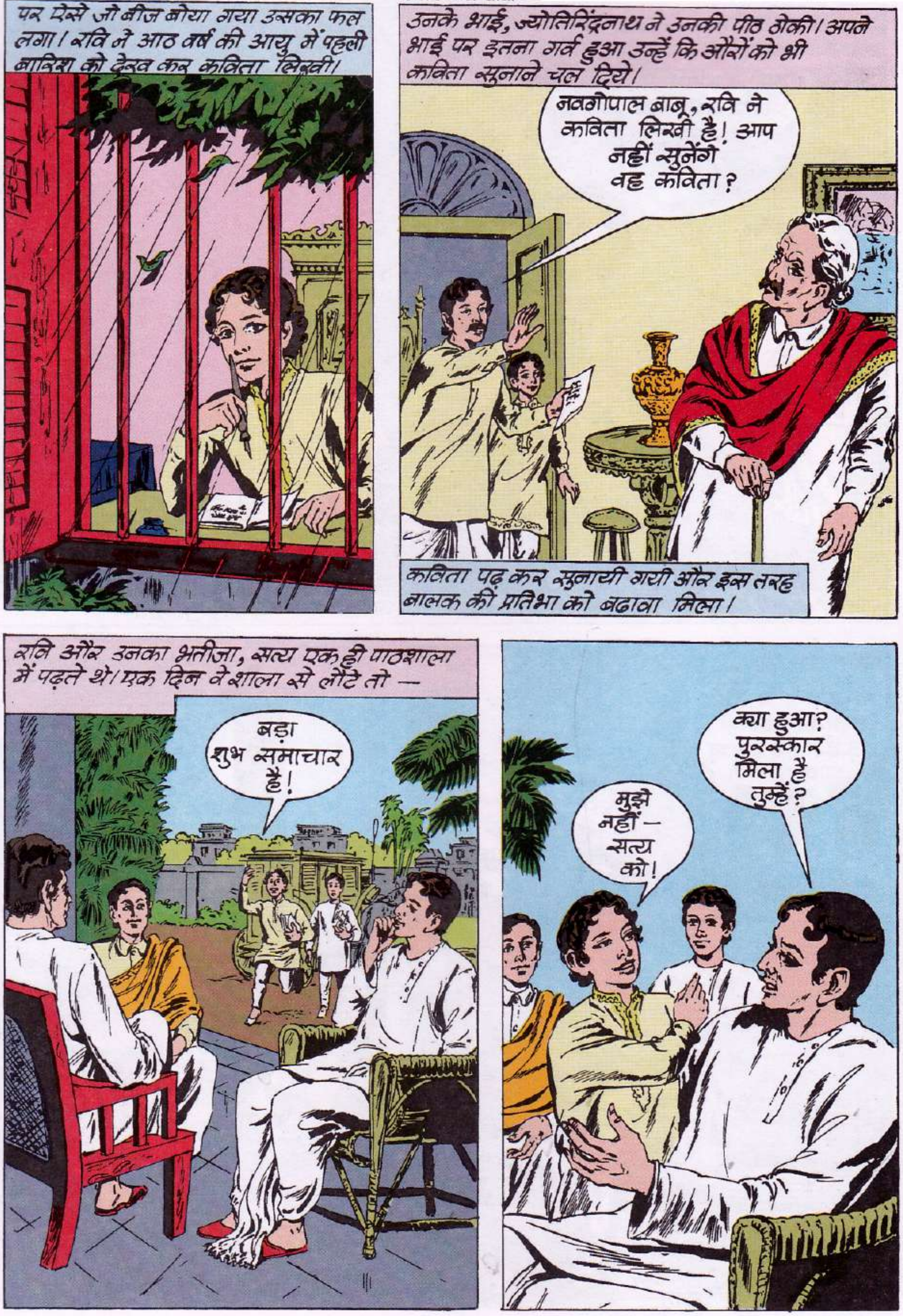
पर ऐसे जो बीज बोया गया उसका फल लगा। रवि ने आठ वर्ष की आयु में पहली बारिश को देख कर कविता लिखी।
उनके भाई, ज्योतिरिंद्रनाथ ने उनकी पीठ ठोकी। अपने भाई पर इतना गर्व हुआ उन्हें कि औरों को भी कविता सुनाने चल दिये।
नवगोपाल बाबू, रवि ने कविता लिखी है! आप नहीं सुनेंगे वह कविता?
कविता पढ़ कर सुनायी गयी और इस तरह बालक की प्रतिभा को बढ़ावा मिला।
रवि और उनका भतीजा, सत्य एक ही पाठशाला में पढ़ते थे। एक दिन वे शाला से लौटे तो —
बड़ा शुभ समाचार है!
क्या हुआ? पुरस्कार मिला है तुम्हें?
मुझे नहीं — सत्य को!

देखा! भतीजे को पुरस्कार मिलने की कैसी खुशी है रवि को! बड़ा अच्छा गुण है यह!
कल्पना-शक्ति का धनी बालक अक्सर स्कूल से गोत लगा जाता था...
... और खो जाता था प्रकृति के सौंदर्य में।
घरवालों को ज़रूर इससे चिंता होती थी।
रवि अक्सर शाला में नहीं आता।
हमारी आशाओ पर पानी फेर दिया उसने!
परंतु ज्योतिरिंद्रनाथ और उनकी पत्नी, कादम्बरी आश्वस्त थे।
बड़ी सुंदर कविताएँ लिखता है।
यह महान कवि हो कर रहेगा।

रवि स्कूल से छुट्टी कर देते थे तथापि इससे उनकी शिक्षा में कमी नहीं आयी। उनका घर वास्तव में किसी विश्वविद्यालय से कम न था। जाने-माने कवि, विद्वान, संगीतज्ञ, वैज्ञानिक और दार्शनिक उनके यहाँ अक्सर जमा हुआ करते थे। ज्ञान का भंडार थे वे लोग।

रवि जब लगभग १२ वर्ष के थे, महर्षि देवेंद्रनाथ बहुत लम्बी अवधि के बाद हिमालय से घर लौटे।
मैं यहाँ हूँ तब तक लड़कों का जनेऊ कर देना चाहिए।

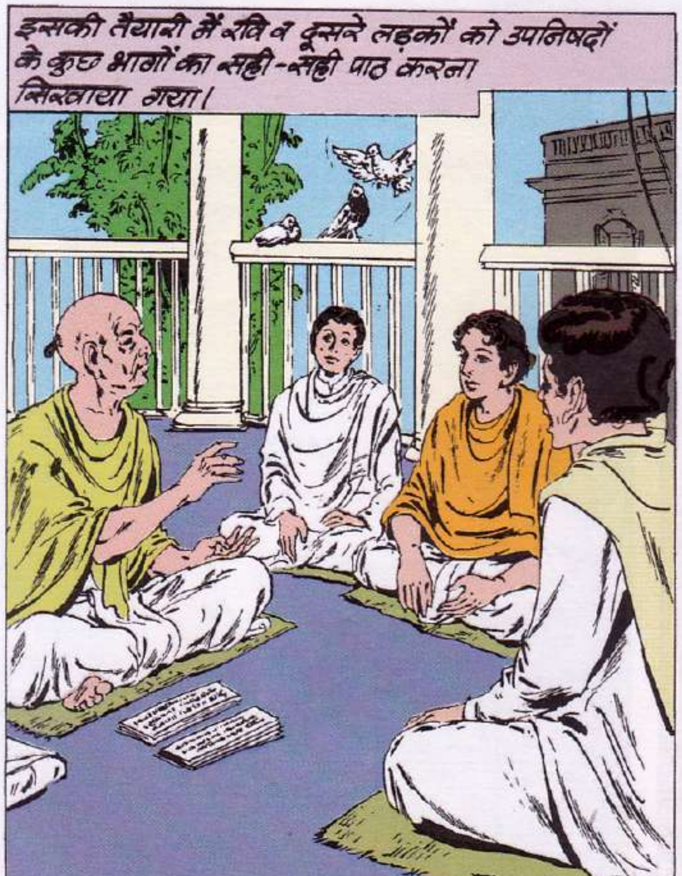
इसकी तैयारी में रवि व दूसरे लड़कों को उपनिषदों के कुछ भागों का सही-सही पाठ करना सिखाया गया।

और फिर उनका मुंडन कर के, कानों में सोने की बालियाँ पहन कर तीन दिन एकांत में रखा गया।

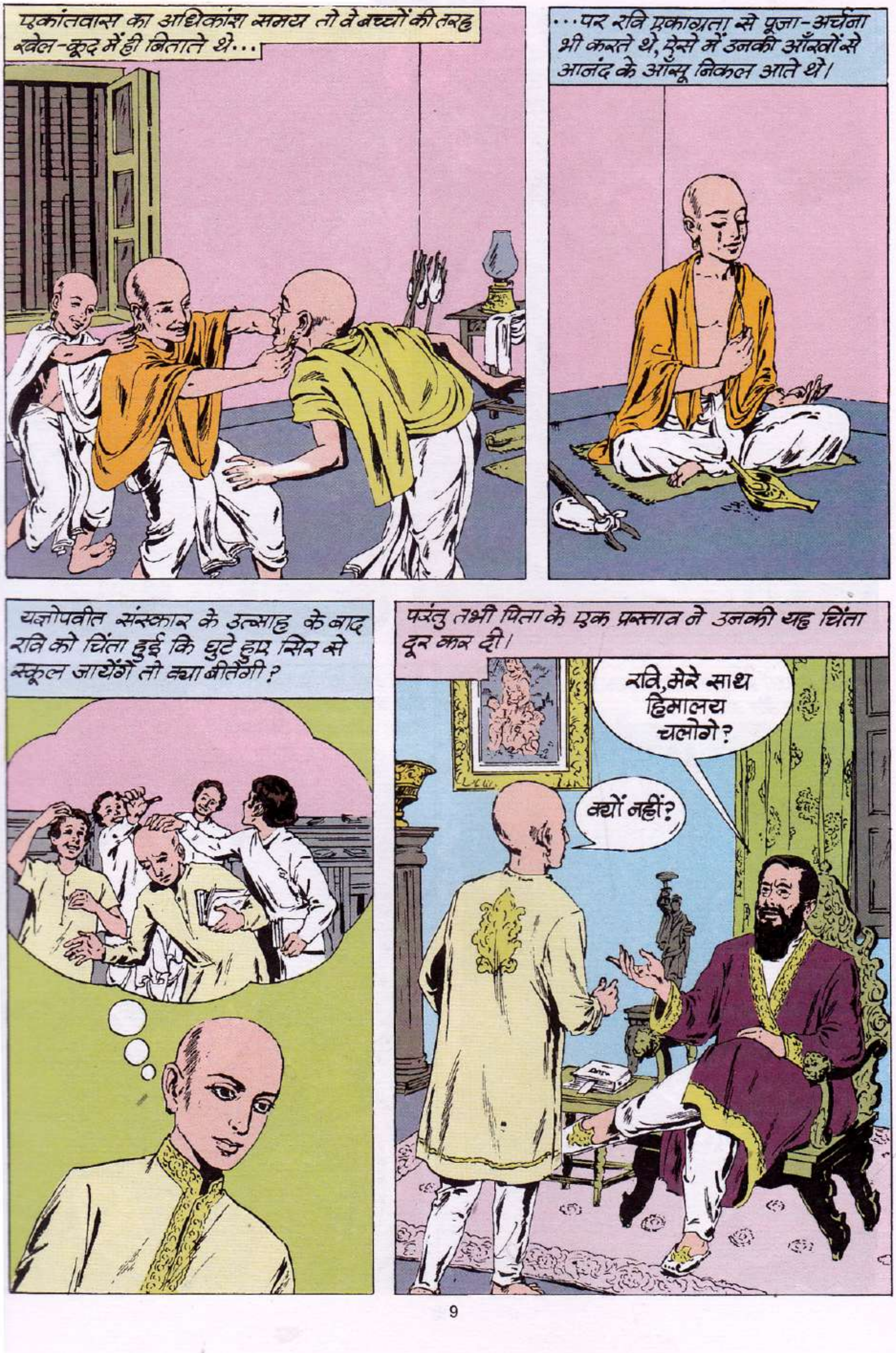
एकांतवास का अधिकांश समय तो वे बच्चों की तरह खेल-कूद में ही बिताते थे...
...पर रवि एकाग्रता से पूजा-अर्चना भी करते थे, ऐसे में उनकी आँखों से आनंद के आँसू निकल आते थे।
यज्ञोपवीत संस्कार के उत्साह के बाद रवि को चिंता हुई कि घुटे हुए सिर से स्कूल जायेंगे तो क्या बीतेगी?
परंतु तभी पिता के एक प्रस्ताव ने उनकी यह चिंता दूर कर दी।
रवि, मेरे साथ हिमालय चलोगे?
क्यों नहीं?

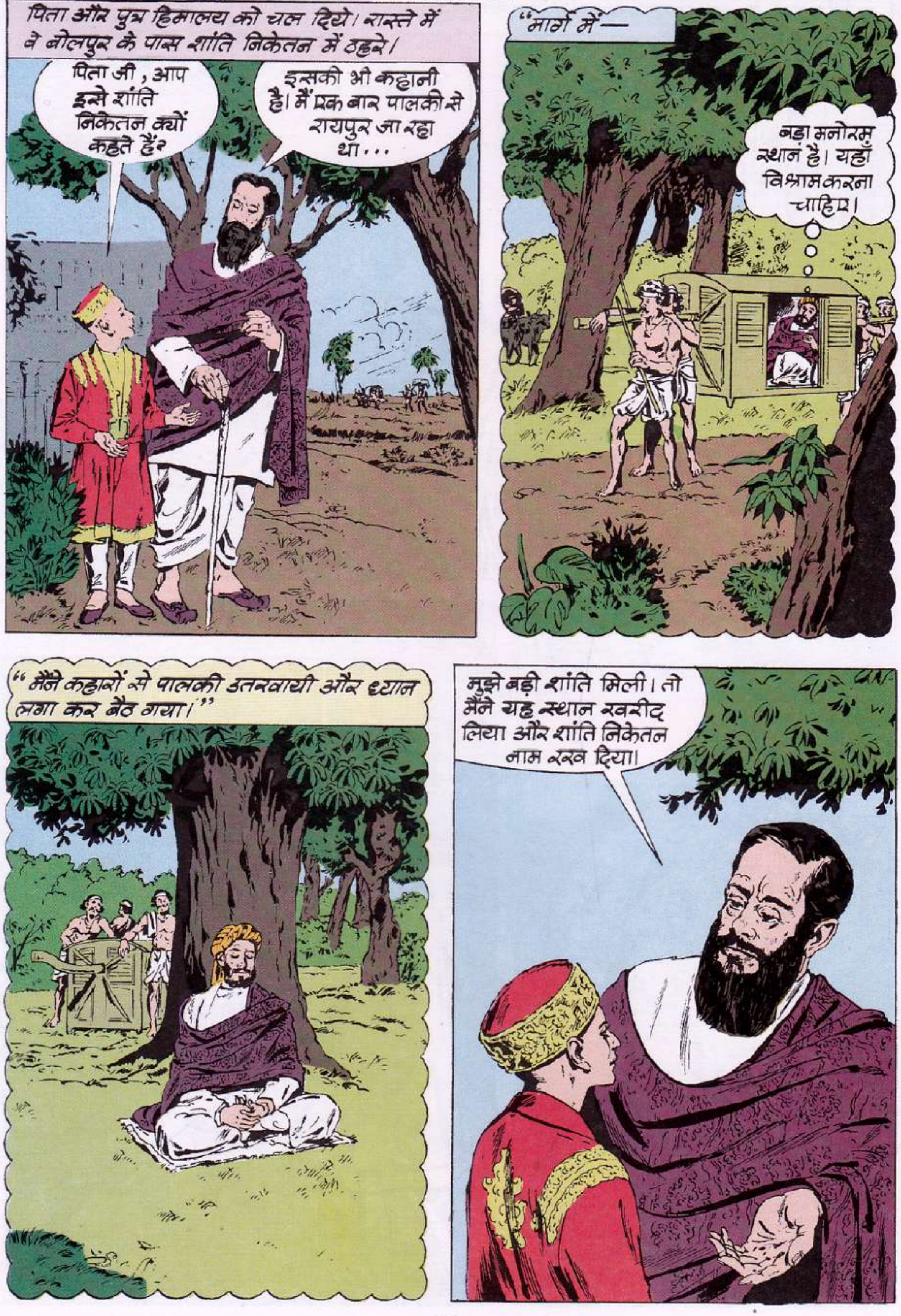
पिता और पुत्र हिमालय को चल दिये। रास्ते में वे बोलपुर के पास शांति निकेतन में ठहरे।
पिता जी, आप इसे शांति निकेतन क्यों कहते हैं?
इसकी भी कहानी है। मैं एक बार पालकी से रायपुर जा रहा था...
"मार्ग में—
बड़ा मनोरम् स्थान है। यहाँ विश्राम करना चाहिए।
"मैंने कहारों से पालकी उतरवायी और ध्यान लगा कर बैठ गया।"
मुझे बड़ी शांति मिली। तो मैंने यह स्थान खरीद लिया और शांति निकेतन नाम रख दिया।

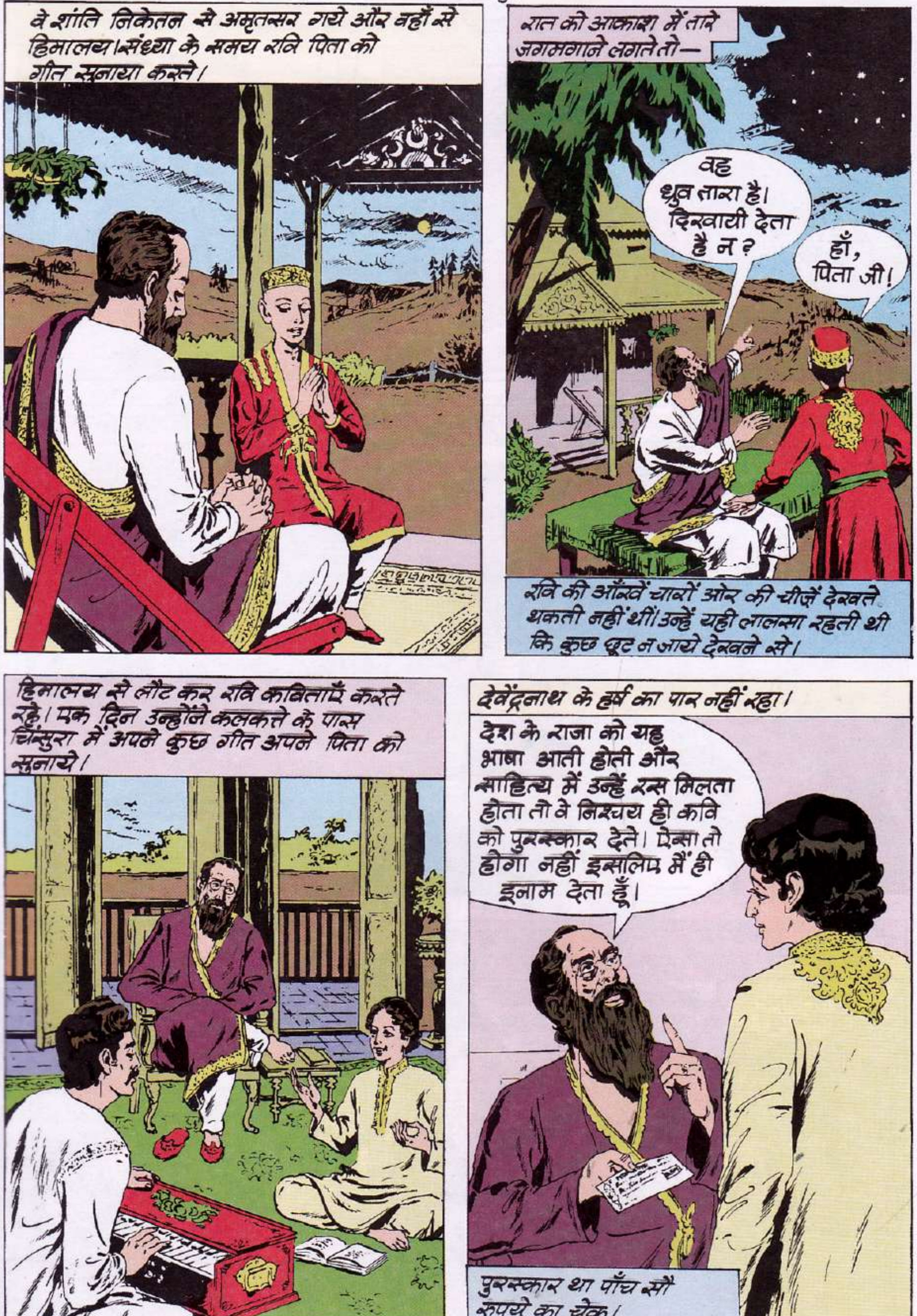
वे शांति निकेतन से अमृतसर गये और वहाँ से हिमालय। संध्या के समय रवि पिता को गीत सुनाया करते।
रात को आकाश में तारे जगमगाने लगते तो—
वह ध्रुव तारा है। दिखायी देता है न?
हाँ, पिता जी!
रवि की आँखें चारों ओर की चीज़ें देखते थकती नहीं थीं। उन्हें यही लालसा रहती थी कि कुछ छूट न जाये देखने से।
हिमालय से लौट कर रवि कविताएँ करते रहे। एक दिन उन्होंने कलकत्ते के पास चिन्सुरा में अपने कुछ गीत अपने पिता को सुनाये।
देवेंद्रनाथ के हर्ष का पार नहीं रहा।
देश के राजा को यह भाषा आती होती और साहित्य में उन्हें रस मिलता होता तो वे निश्चय ही कवि को पुरस्कार देते। ऐसा तो होगा नहीं इसलिए मैं ही इनाम देता हूँ।
पुरस्कार था पाँच सौ रुपये का चेक।

प्रख्यात बंगला लेखक बंकिम चंद्र चटर्जी।

१८८३ में रवींद्रनाथ का मृणालिनी देवी से विवाह हुआ तब वे २२ वर्ष के थे और वधू ११ की।
मेरी गुड़ियों के लिए घर बनवा दो न!
ठाकुर अपनी पत्नी को बंगला और संस्कृत पढ़ाने लगे।
इस विवाह के चार महीने बाद रवींद्रनाथ की चहेती भाभी, कादम्बरी का देहांत हो गया। इस शोक ने कवि के संवेदनशील हृदय को भेद दिया और उन्होंने अनेक करुणापूर्ण गीत लिखे।
१८९० में एक दिन रवींद्रनाथ ने अनोखी इच्छा व्यक्त की।
हम लोग पैदल कलकत्ते से पेशावर चलें। इससे हमारे अनुभवों का भंडार भरेगा।
हँसी करते हो?
क्या उल्टी सूझी है तुम्हें!
पर उनके पिता ने यह बात सुनी तो –
रवि को यात्रा करने का अवसर देना चाहिए। परंतु घूमने-फिरने के साथ कुछ काम-काज भी करे

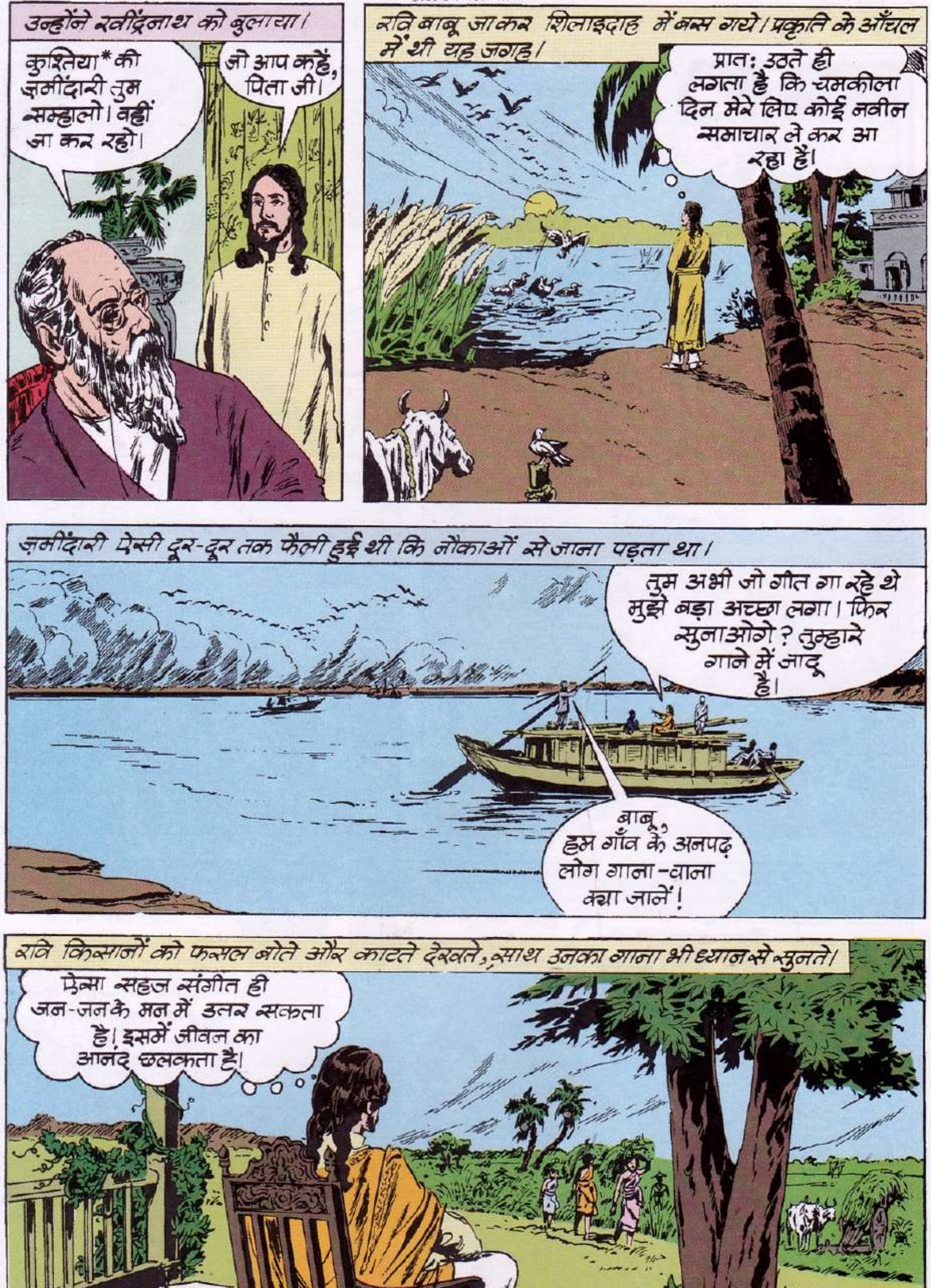
उन्होंने रवींद्रनाथ को बुलाया।
कुश्तिया* की ज़मींदारी तुम सम्हालो। वहीं जा कर रहो।
जो आप कहें, पिता जी।
रवि बाबू जा कर शिलाइदाह में बस गये। प्रकृति के आँचल में थी यह जगह।
प्रात: उठते ही लगता है कि चमकीला दिन मेरे लिए कोई नवीन समाचार ले कर आ रहा है।
ज़मींदारी ऐसी दूर-दूर तक फैली हुई थी कि नौकाओं से जाना पड़ता था।
तुम अभी जो गीत गा रहे थे मुझे बड़ा अच्छा लगा। फिर सुनाओगे? तुम्हारे गाने में जादू है।
बाबू, हम गाँव के अनपढ़ लोग गाना-वाना क्या जानें!
रवि किसानों को फसल बोते और काटते देखते, साथ उनका गाना भी ध्यान से सुनते।
ऐसा सहज संगीत ही जन-जन के मन में उतर सकता है। इसमें जीवन का आनंद छलकता है।

* अब बांगला देश में

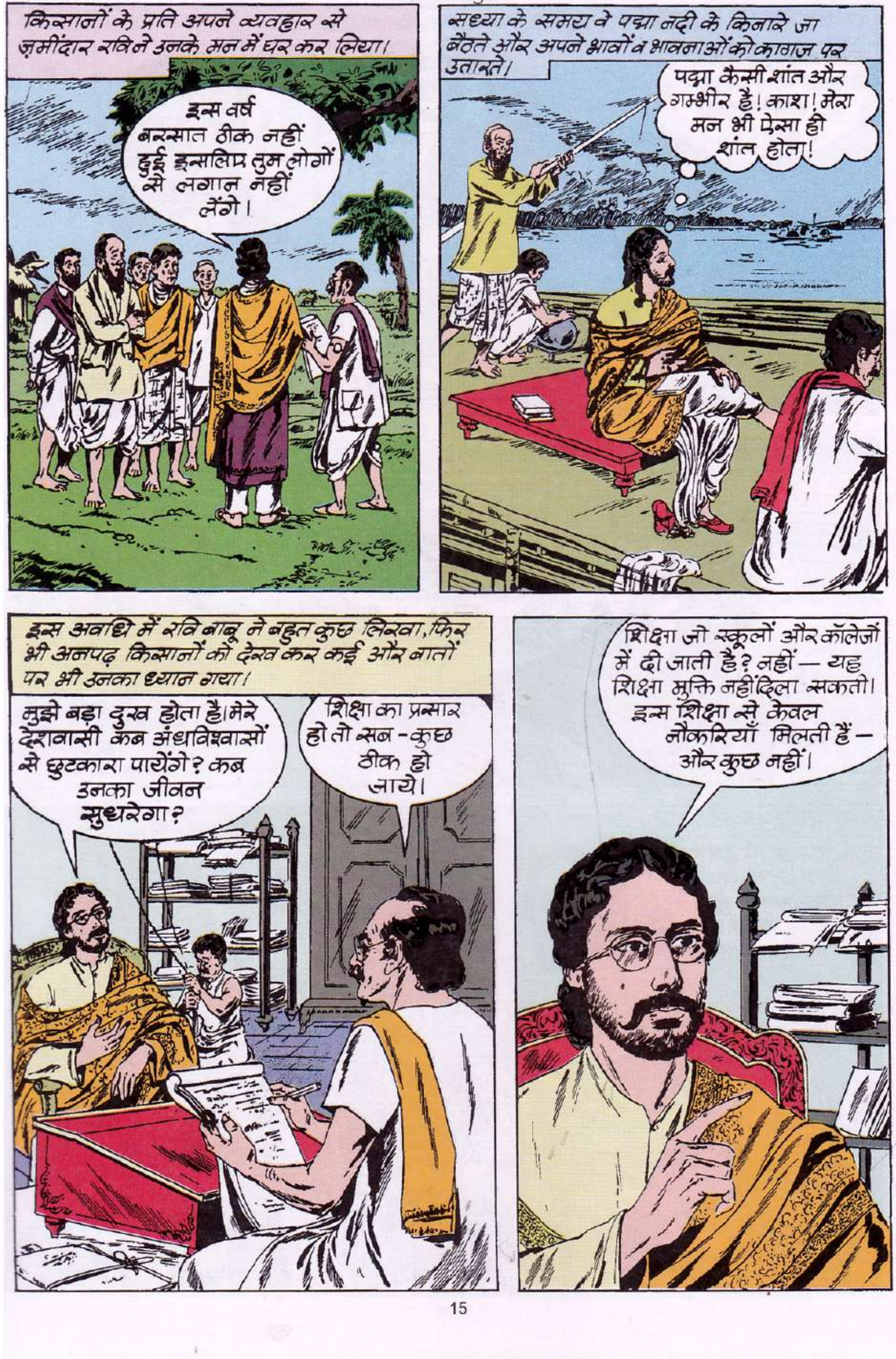
किसानों के प्रति अपने व्यवहार से ज़मींदार रवि ने उनके मन में घर कर लिया।
इस वर्ष बरसात ठीक नहीं हुई इसलिए तुम लोगों से लगान नहीं लेंगे।
संध्या के समय वे पद्मा नदी के किनारे जा बैठते और अपने भावों व भावनाओं को कागज पर उतारते।
पद्मा कैसी शांत और गम्भीर है! काश! मेरा मन भी ऐसा ही शांत होता!
इस अवधि में रवि बाबू ने बहुत कुछ लिखा, फिर भी अनपढ़ किसानों को देख कर कई और बातों पर भी उनका ध्यान गया।
मुझे बड़ा दुख होता है। मेरे देशवासी कब अंधविश्वासों से छुटकारा पायेंगे? कब उनका जीवन सुधरेगा?
शिक्षा का प्रसार हो तो सब-कुछ ठीक हो जाये।
शिक्षा जो स्कूलों और कॉलेजों में दी जाती है? नहीं — यह शिक्षा मुक्ति नहीं दिला सकती। इस शिक्षा से केवल नौकरियाँ मिलती हैं — और कुछ नहीं।

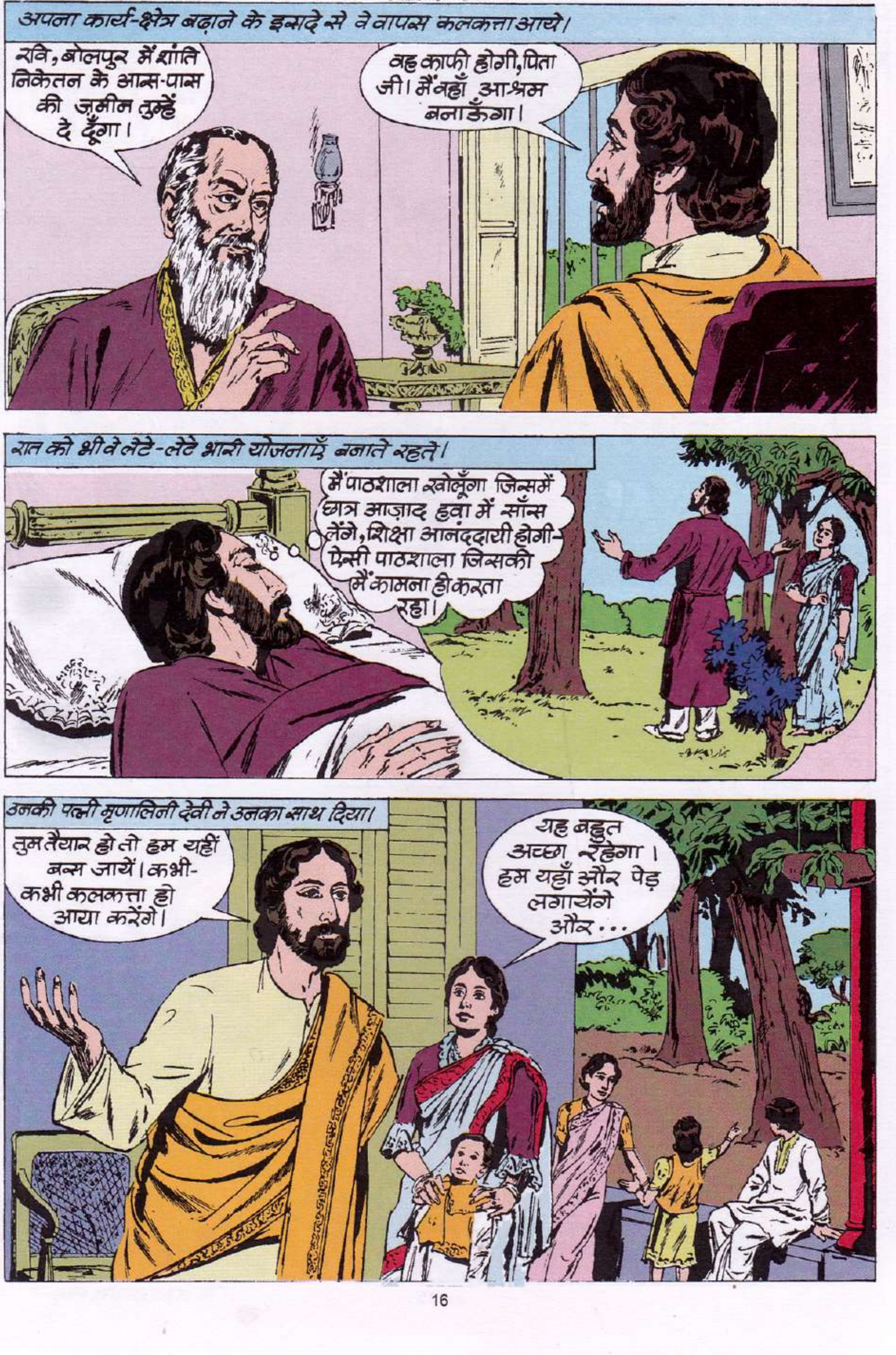
अपना कार्य-क्षेत्र बढ़ाने के इरादे से वे वापस कलकत्ता आये।
रवि, बोलपुर में शांति निकेतन के आस-पास की ज़मीन तुम्हें दे दूँगा।
वह काफी होगी, पिता जी। मैं वहाँ आश्रम बनाऊँगा।
रात को भी वे लेटे-लेटे भारी योजनाएँ बनाते रहते।
मैं पाठशाला खोलूँगा जिसमें छात्र आज़ाद हवा में साँस लेंगे, शिक्षा आनंददायी होगी- ऐसी पाठशाला जिसकी मैं कामना ही करता रहा।
उनकी पत्नी मृणालिनी देवी ने उनका साथ दिया।
तुम तैयार हो तो हम यहीं बस जायें। कभी-कभी कलकत्ता हो आया करेंगे।
यह बहुत अच्छा रहेगा। हम यहाँ और पेड़ लगायेंगे और...

२२ दिसम्बर, १९०१ को शांति निकेतन में उन्होंने प्रकृति की गोद में प्राचीन आश्रमों जैसी पाठशाला प्रारंभ की। थोड़े-से छात्र थे और थोड़े-से ही शिक्षक। वे स्वयं भी पढ़ाते थे।
कोई बात समझ में न आये तो डरो मत, मुझसे पूछो। मैं फिर समझाऊँगा।
आज पाठ यहीं तक। अब चलो नाटक खेलें।
बच्चों में जिज्ञासा जन्म से ही होती है। उन्हें बढ़ावा दिया जाये तो शिक्षा आनंदमय हो जाती है। शांति निकेतन में बालकों को यही आनंद मिलने लगा।

वे अनुशासन और खुशी के साथ अपने काम करते थे।
मृणालिनी देवी माँ की तरह बच्चों की देख-भाल करती थीं।
आज तुमने हाथ-मुँह अच्छी तरह नहीं धोये। क्यों?
परंतु—
शिक्षा को आनंदमय बनाने में लोगों में उत्साह नहीं है।

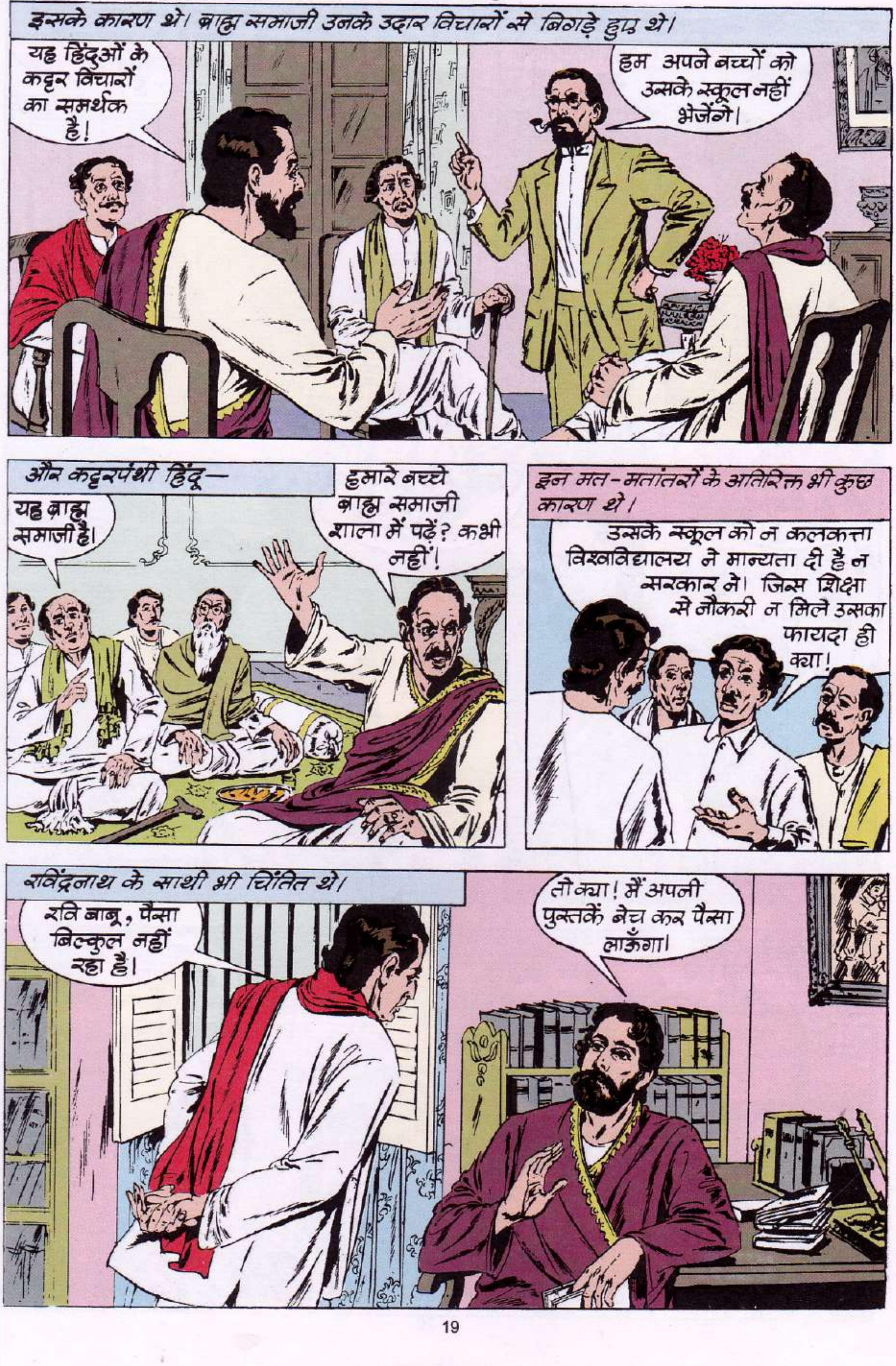

इसके कारण थे। ब्राह्म समाजी उनके उदार विचारों से बिगड़े हुए थे।
यह हिंदुओं के कट्टर विचारों का समर्थक है!
हम अपने बच्चों को उसके स्कूल नहीं भेजेंगे।
और कट्टरपंथी हिंदू—
यह ब्राह्म समाजी है।
हमारे बच्चे ब्राह्म समाजी शाला में पढ़ें? कभी नहीं!
इन मत-मतांतरों के अतिरिक्त भी कुछ कारण थे।
उसके स्कूल को न कलकत्ता विश्वविद्यालय ने मान्यता दी है न सरकार ने। जिस शिक्षा से नौकरी न मिले उसका फायदा ही क्या!
रविंद्रनाथ के साथी भी चिंतित थे।
रवि बाबू, पैसा बिल्कुल नहीं रहा है।
तो क्या! मैं अपनी पुस्तकें बेच कर पैसा लाऊँगा।

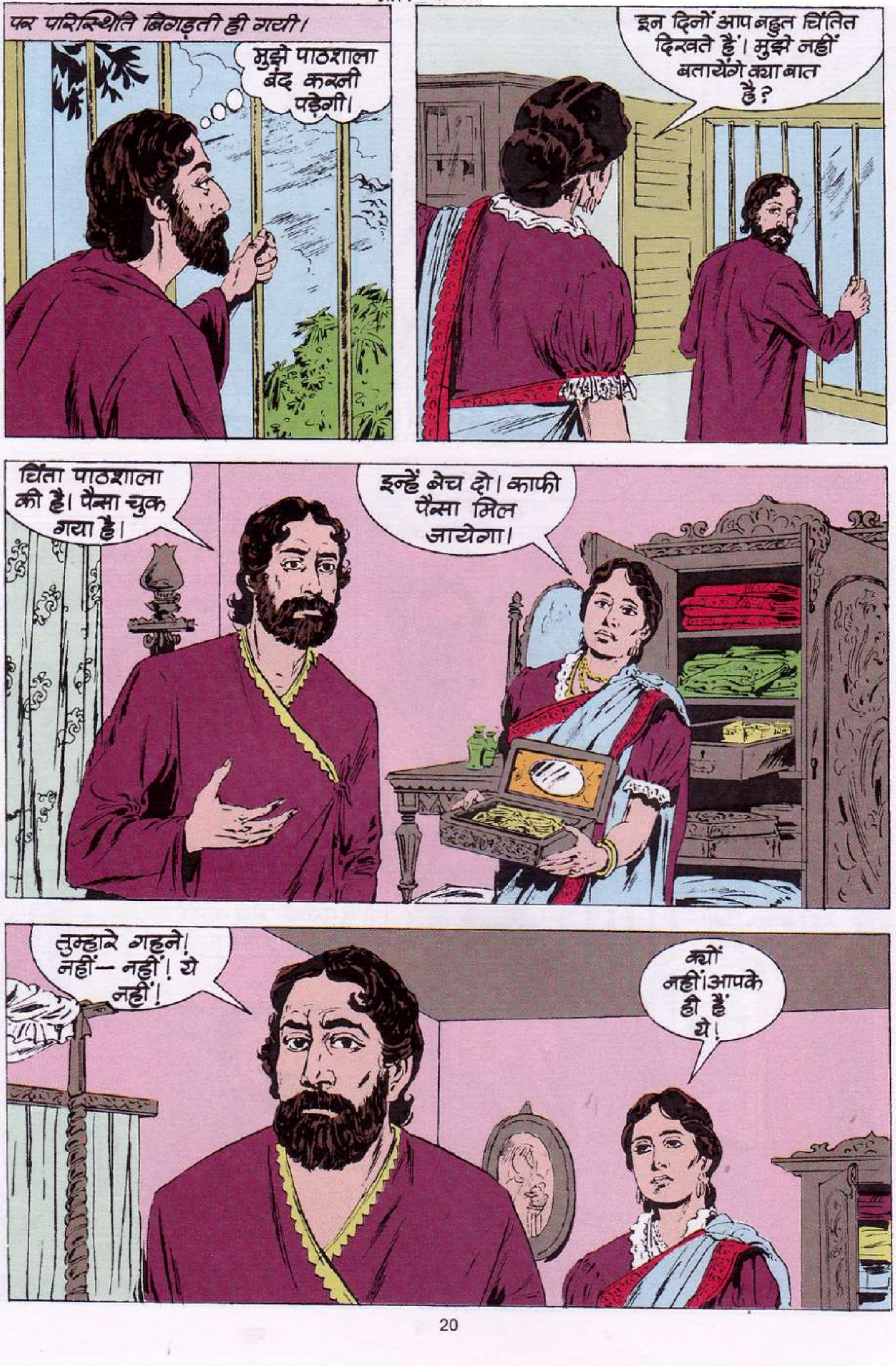
पर परिस्थिति बिगड़ती ही गयी।
मुझे पाठशाला बंद करनी पड़ेगी।
इन दिनों आप बहुत चिंतित दिखते हैं। मुझे नहीं बतायेंगे क्या बात है?
चिंता पाठशाला की है। पैसा चुक गया है।
इन्हें बेच दो। काफी पैसा मिल जायेगा।
तुम्हारे गहने! नहीं— नहीं! ये नहीं!
क्यों नहीं। आपके ही हैं ये!

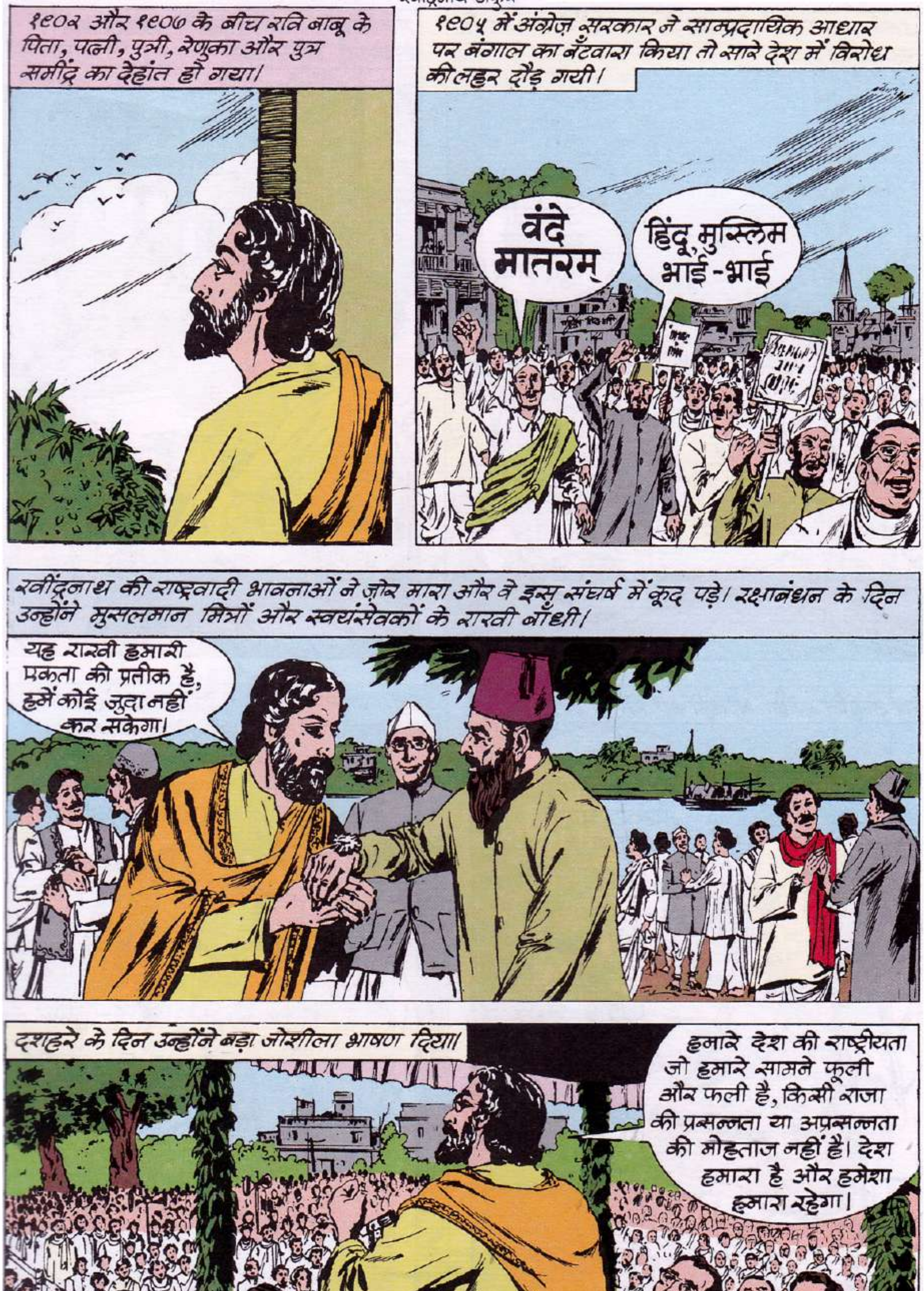
१९०२ और १९०७ के बीच रवि बाबू के पिता, पत्नी, पुत्री, रेणुका और पुत्र समींद्र का देहांत हो गया।
१९०५ में अंग्रेज़ सरकार ने साम्प्रदायिक आधार पर बंगाल का बँटवारा किया तो सारे देश में विरोध की लहर दौड़ गयी।
वंदे मातरम्
हिंदु मुस्लिम भाई-भाई
रवींद्रनाथ की राष्ट्रवादी भावनाओं ने ज़ोर मारा और वे इस संघर्ष में कूद पड़े। रक्षाबंधन के दिन उन्होंने मुसलमान मित्रों और स्वयंसेवकों के राखी बाँधी।
यह राखी हमारी एकता की प्रतीक है, हमें कोई जुदा नहीं कर सकेगा।
दशहरे के दिन उन्होंने बड़ा जोशीला भाषण दिया।
हमारे देश की राष्ट्रीयता जो हमारे सामने फूली और फली है, किसी राजा की प्रसन्नता या अप्रसन्नता की मोहताज नहीं है। देश हमारा है और हमेशा हमारा रहेगा।

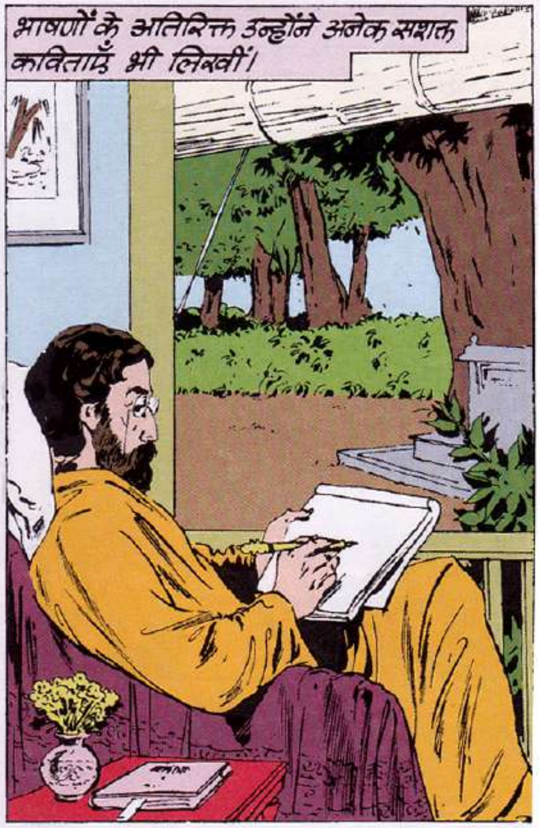

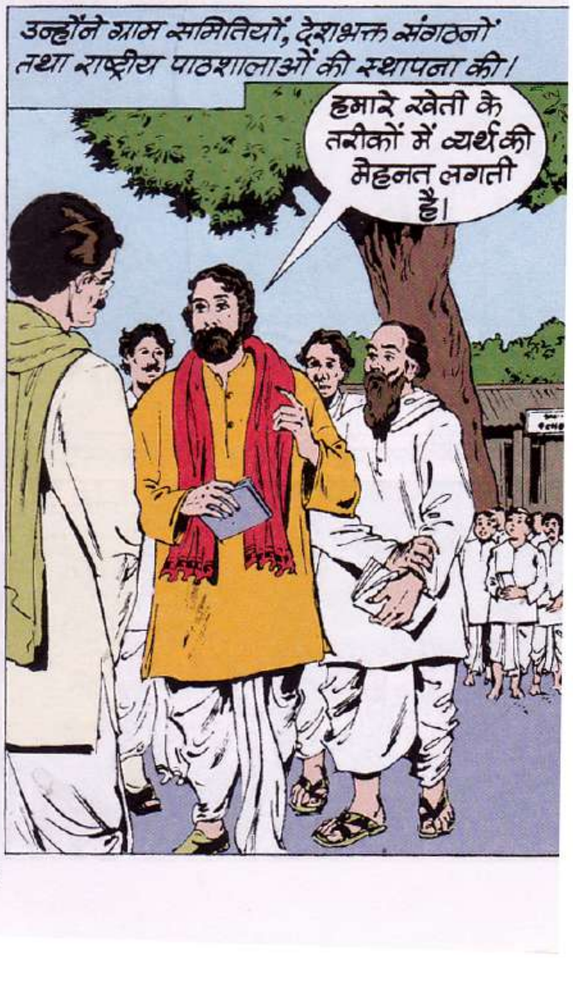

* मेरे सुनहरे बंगाल, मैं तुझसे प्यार करता हूँ।

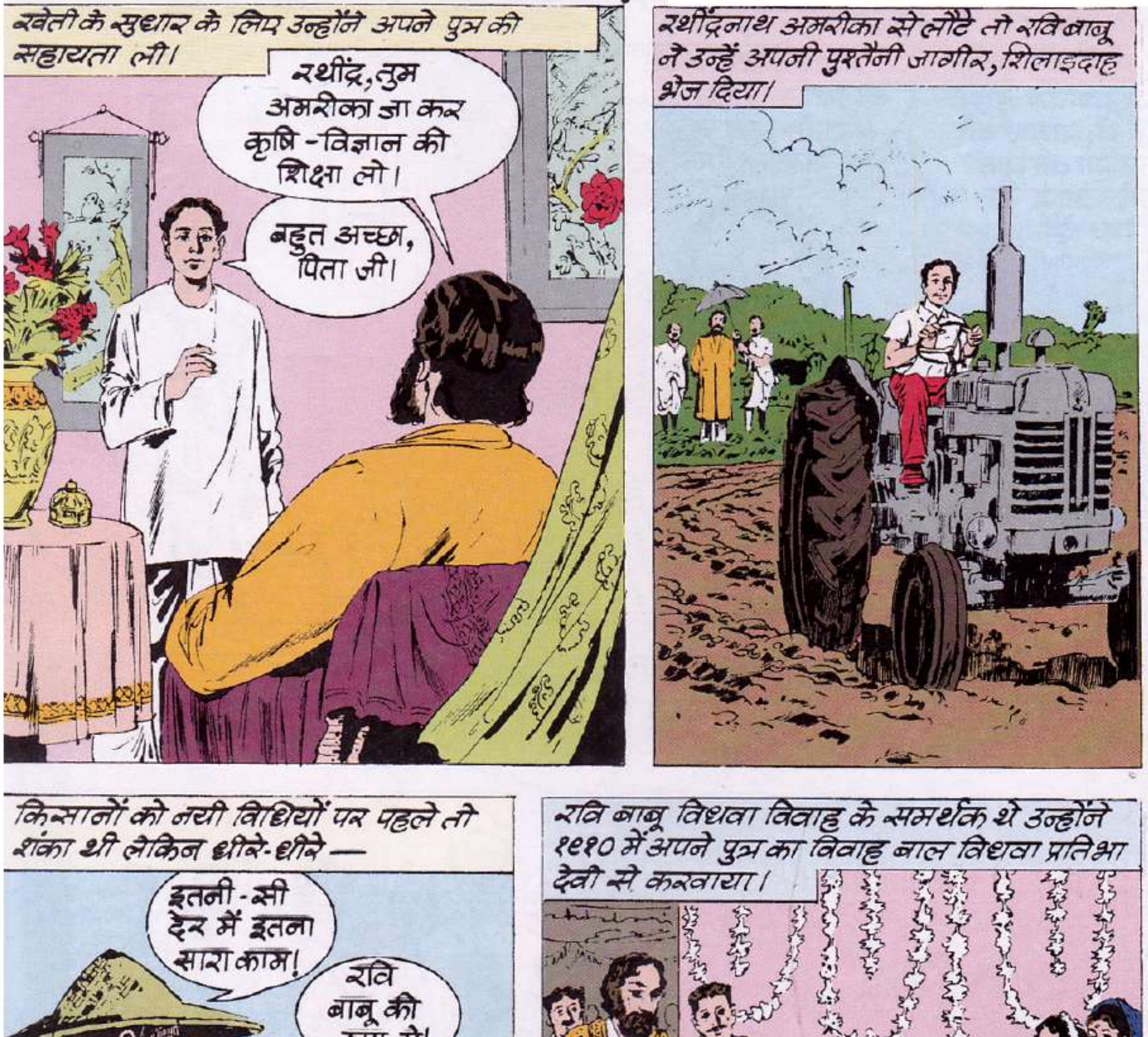
खेती के सुधार के लिए उन्होंने अपने पुत्र की सहायता ली।
रथींद्र, तुम अमरीका जा कर कृषि-विज्ञान की शिक्षा लो।
बहुत अच्छा, पिता जी।
रथींद्रनाथ अमरीका से लौटे तो रवि बाबू ने उन्हें अपनी पुश्तैनी जागीर, शिलाइदाह भेज दिया।
किसानों को नयी विधियों पर पहले तो शंका थी लेकिन धीरे-धीरे —
इतनी-सी देर में इतना सारा काम!
रवि बाबू की कृपा से!
रवि बाबू विधवा विवाह के समर्थक थे उन्होंने १९१० में अपने पुत्र का विवाह बाल विधवा प्रतिभा देवी से करवाया।

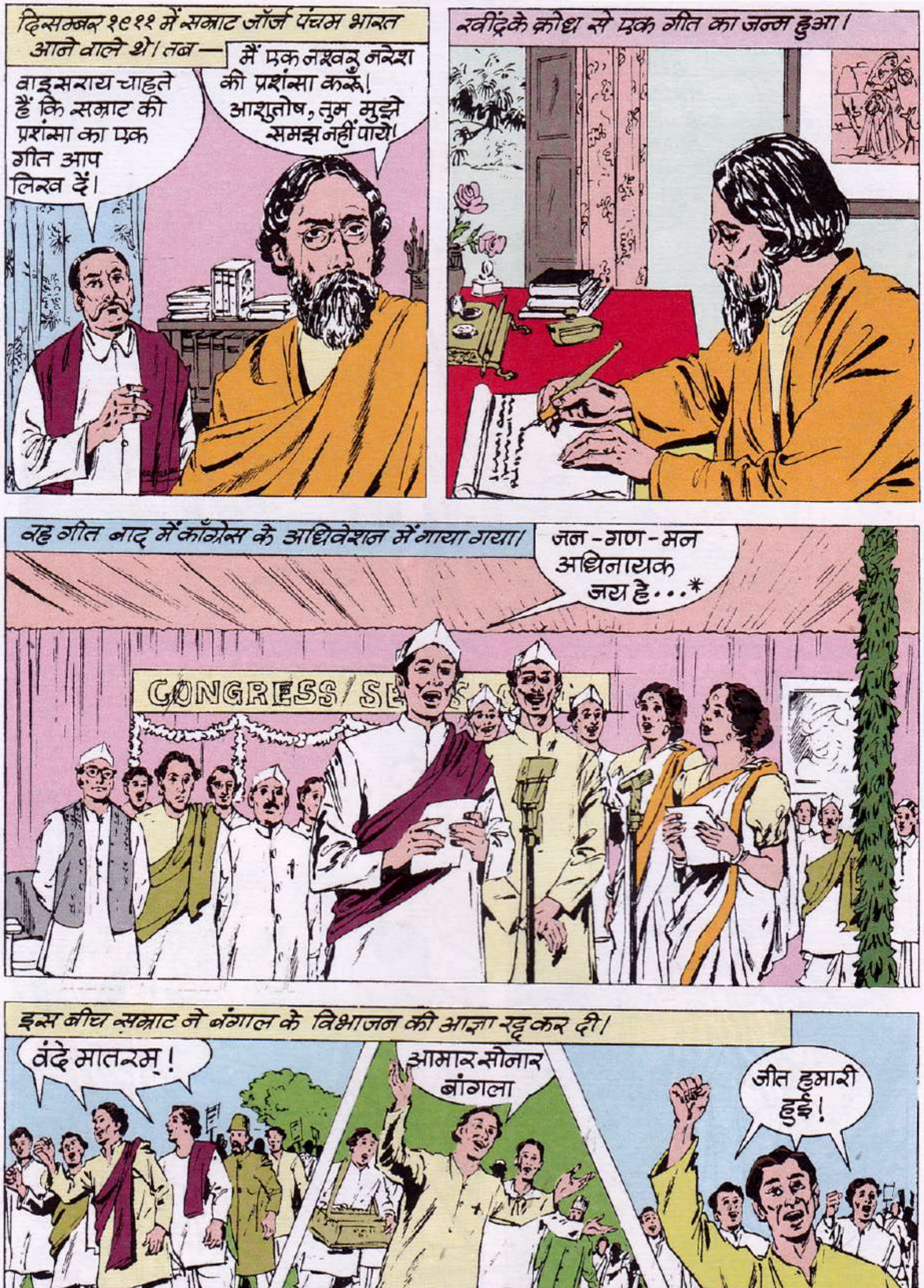

* हमारा वर्तमान राष्ट्र-गीत

उनकी रचनाएँ पढ़ कर अनेक विदेशी उनके प्रशंसक हो गये। जब वे इंग्लैंड गये—
आप "गीतांजलि" का अंग्रेज़ी में अनुवाद क्यों नहीं करते?
यह सुझाव प्रसिद्द अंग्रेज चित्रकार रौथेंस्टीन ने दिया था।
अंग्रेज़ी अनुवाद तैयार हो गया तो महान् कवि डब्लू. बी. ईट्स ने उसकी भूरि भूरि प्रशंसा की।
किसी ने इतना नहीं झकझोरा जितना रवींद्रनाथ की रचनाओं ने।
वे भारत लौटे तब कई लोग उनसे जलने लगे थे। एक दिन—
रवि बाबू, कलकत्ता विश्व-विद्यालय का मैट्रिक का प्रश्न-पत्र आपने देखा? आपकी रचना का एक अंश उसमें इस आदेश के साथ दिया गया है कि "फिर से शुद्ध बंगला में लिखो।"
इससे परेशान होने की ज़रूरत नहीं।
कलकत्ता विश्वविद्यालय के उपकुलपति, सर आशुतोश मुखर्जी ने रवि बाबू को डाक्टर की मानद उपाधि देने का प्रस्ताव किया।
रवींद्रनाथ ठाकुर को साहित्य के डाक्टर की उपाधि देनी चाहिए।
नहीं! नहीं!

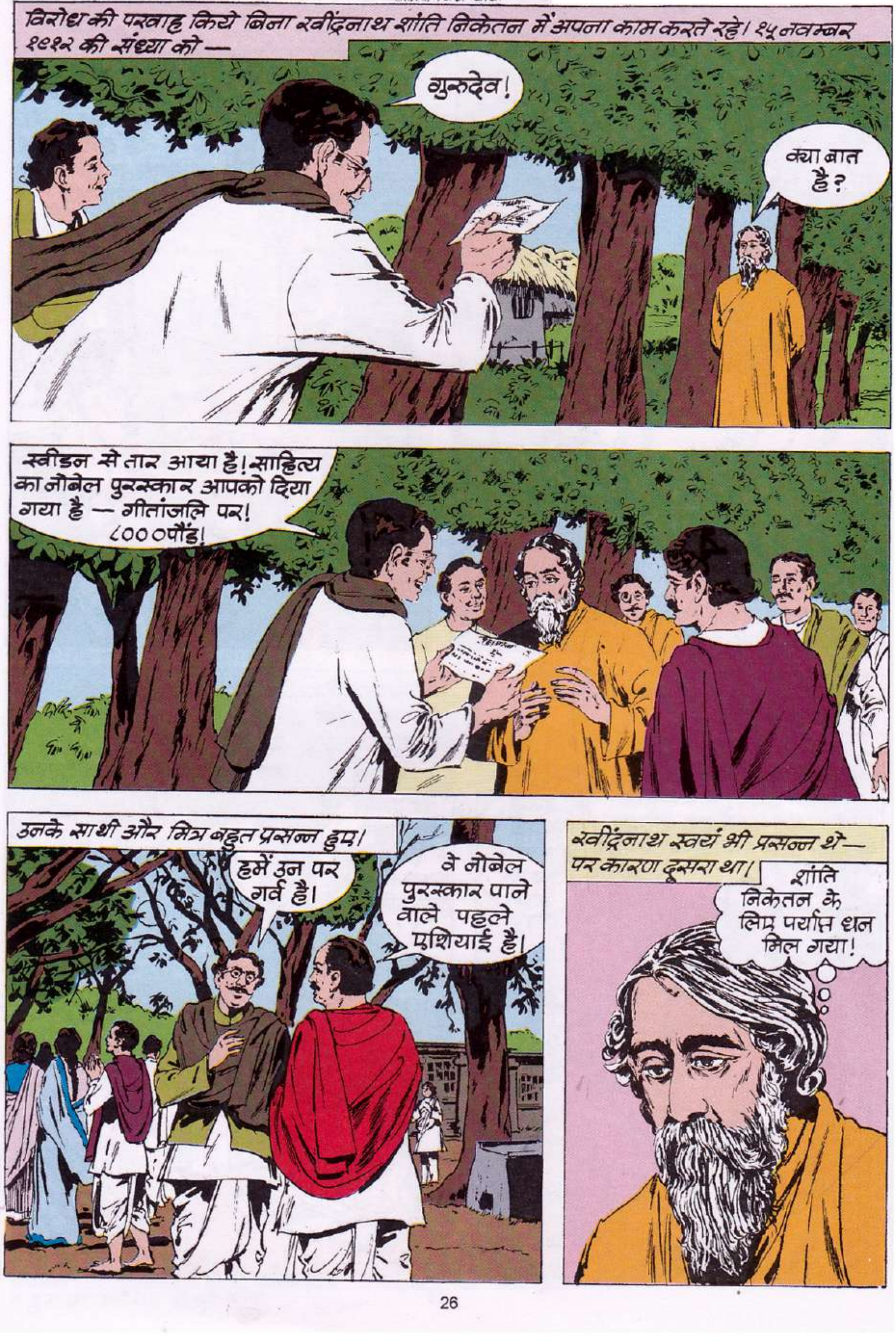
विरोध की परवाह किये बिना रवींद्रनाथ शांति निकेतन में अपना काम करते रहे। १५ नवम्बर १९१२ की संध्या को —
गुरुदेव!
क्या बात है?
स्वीडन से तार आया है! साहित्य का नोबेल पुरस्कार आपको दिया गया है — गीतांजलि पर! ८००० पौंड!
उनके साथी और मित्र बहुत प्रसन्न हुए।
हमें उन पर गर्व है।
वे नोबेल पुरस्कार पाने वाले पहले एशियाई हैं।
रवींद्रनाथ स्वयं भी प्रसन्न थे — पर कारण दूसरा था।
शांति निकेतन के लिए पर्याप्त धन मिल गया!

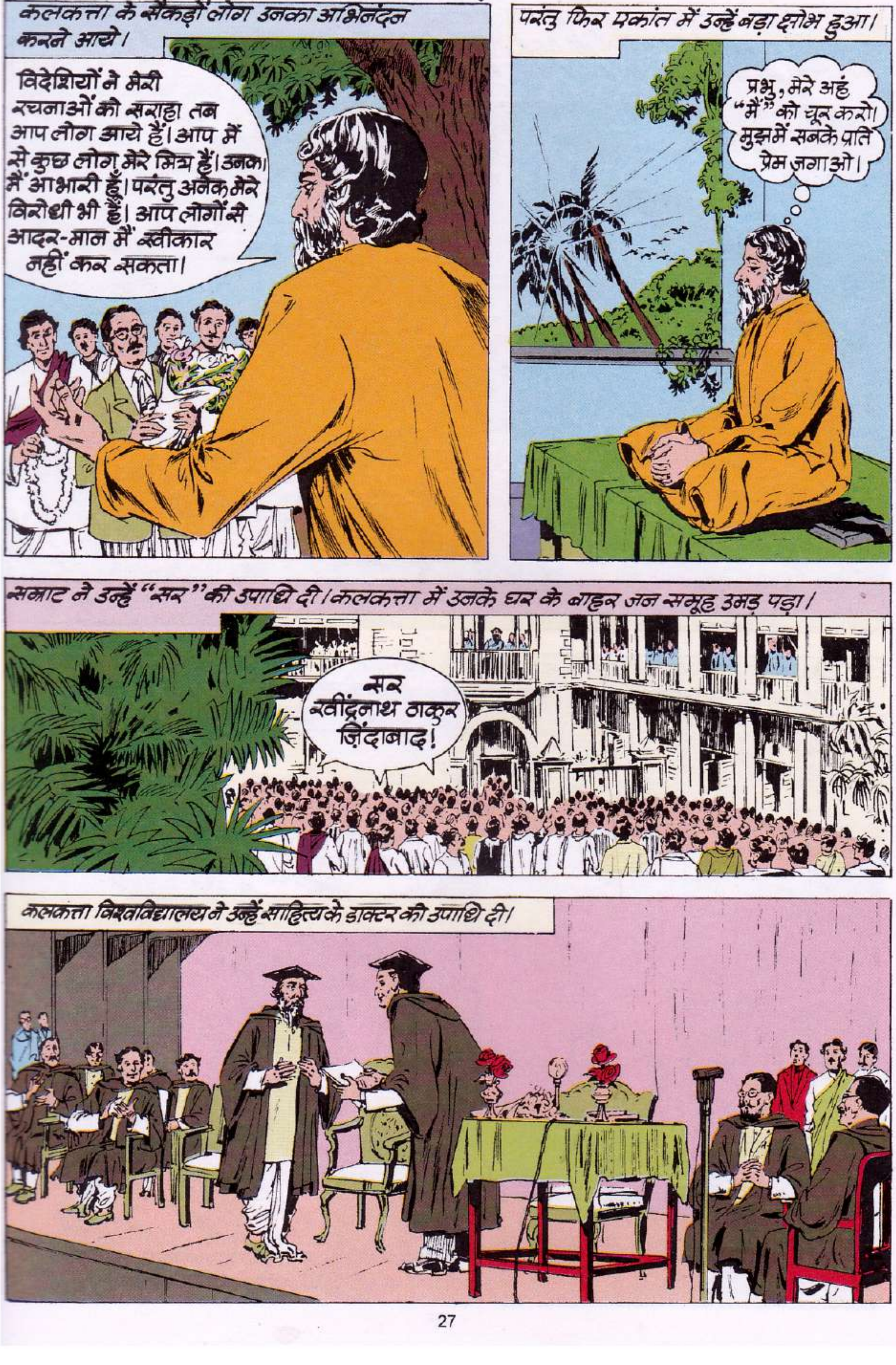
कलकत्ता के सैकड़ों लोग उनका अभिनंदन करने आये।
विदेशियों ने मेरी रचनाओं को सराहा तब आप लोग आये हैं। आप में से कुछ लोग मेरे मित्र हैं। उनका मैं आभारी हूं। परंतु अनेक मेरे विरोधी भी हैं। आप लोगों से आदर-मान मैं स्वीकार नहीं कर सकता।
परंतु फिर एकांत में उन्हें बड़ा क्षोभ हुआ।
प्रभु, मेरे अहं "मैं" को चूर करो। मुझमें सबके प्रति प्रेम जगाओ।
सम्राट ने उन्हें "सर" की उपाधि दी। कलकत्ता में उनके घर के बाहर जन समूह उमड़ पड़ा।
सर रवींद्रनाथ ठाकुर ज़िंदाबाद!
कलकत्ता विश्वविद्यालय ने उन्हें साहित्य के डाक्टर की उपाधि दी।

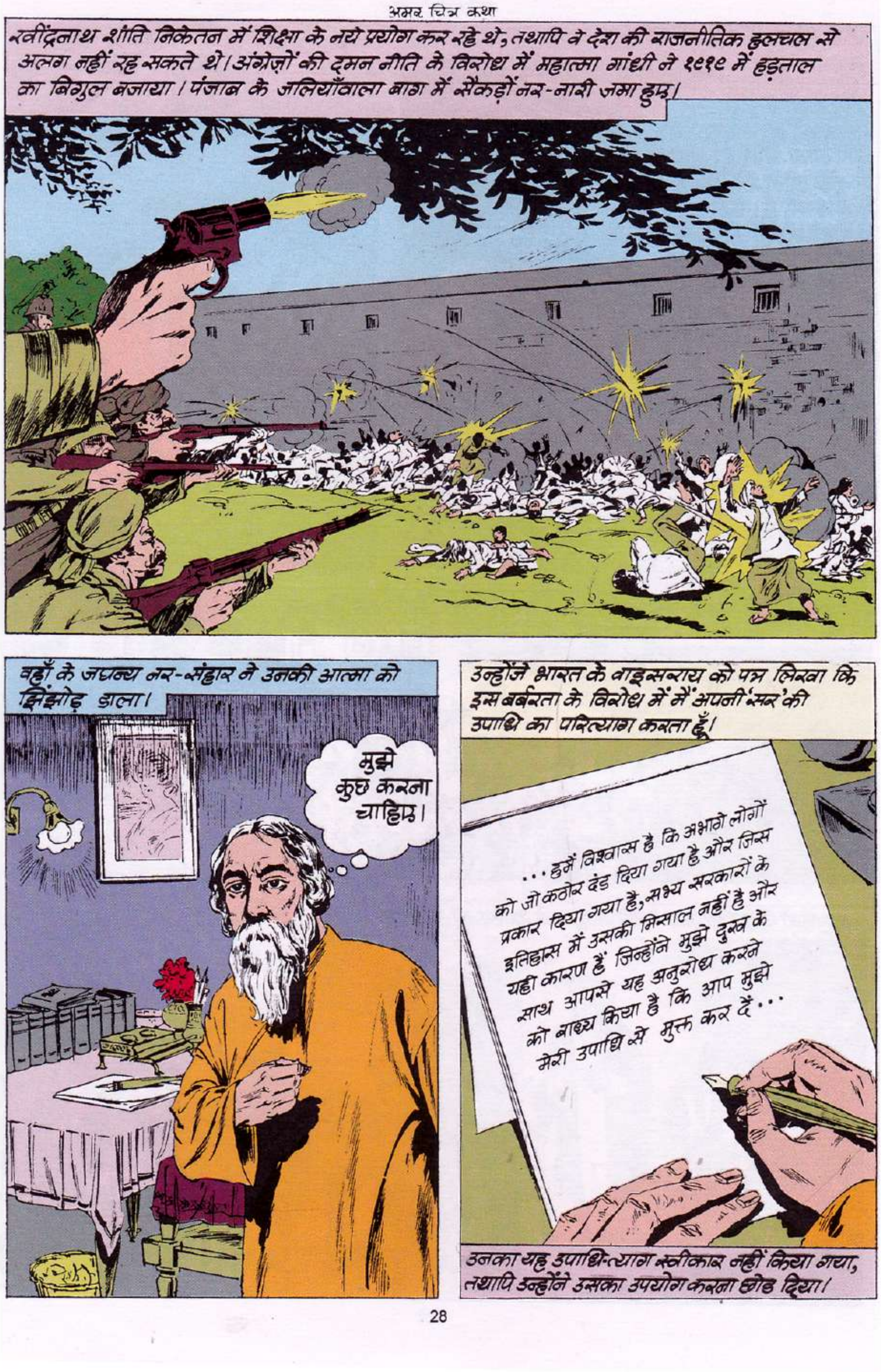
रवींद्रनाथ शांति निकेतन में शिक्षा के नये प्रयोग कर रहे थे, तथापि वे देश की राजनीतिक हलचल से अलग नहीं रह सकते थे। अंग्रेज़ों की दमन नीति के विरोध में महात्मा गांधी ने १९१९ में हड़ताल का बिगुल बजाया। पंजाब के जलियाँवाला बाग में सैकड़ों नर-नारी जमा हुए।
वहाँ के जघन्य नर-संहार ने उनकी आत्मा को झिंझोड़ डाला।
मुझे कुछ करना चाहिए।
उन्होंने भारत के वाइसराय को पत्र लिखा कि इस बर्बरता के विरोध में मैं अपनी 'सर' की उपाधि का परित्याग करता हूँ।
...हमें विश्वास है कि अभागे लोगों को जो कठोर दंड दिया गया है और जिस प्रकार दिया गया है, सभ्य सरकारों के इतिहास में उसकी मिसाल नहीं है और यही कारण हैं जिन्होंने मुझे दुख के साथ आपसे यह अनुरोध करने को बाध्य किया है कि आप मुझे मेरी उपाधि से मुक्त कर दें...
उनका यह उपाधि-त्याग स्वीकार नहीं किया गया, तथापि उन्होंने उसका उपयोग करना छोड़ दिया।

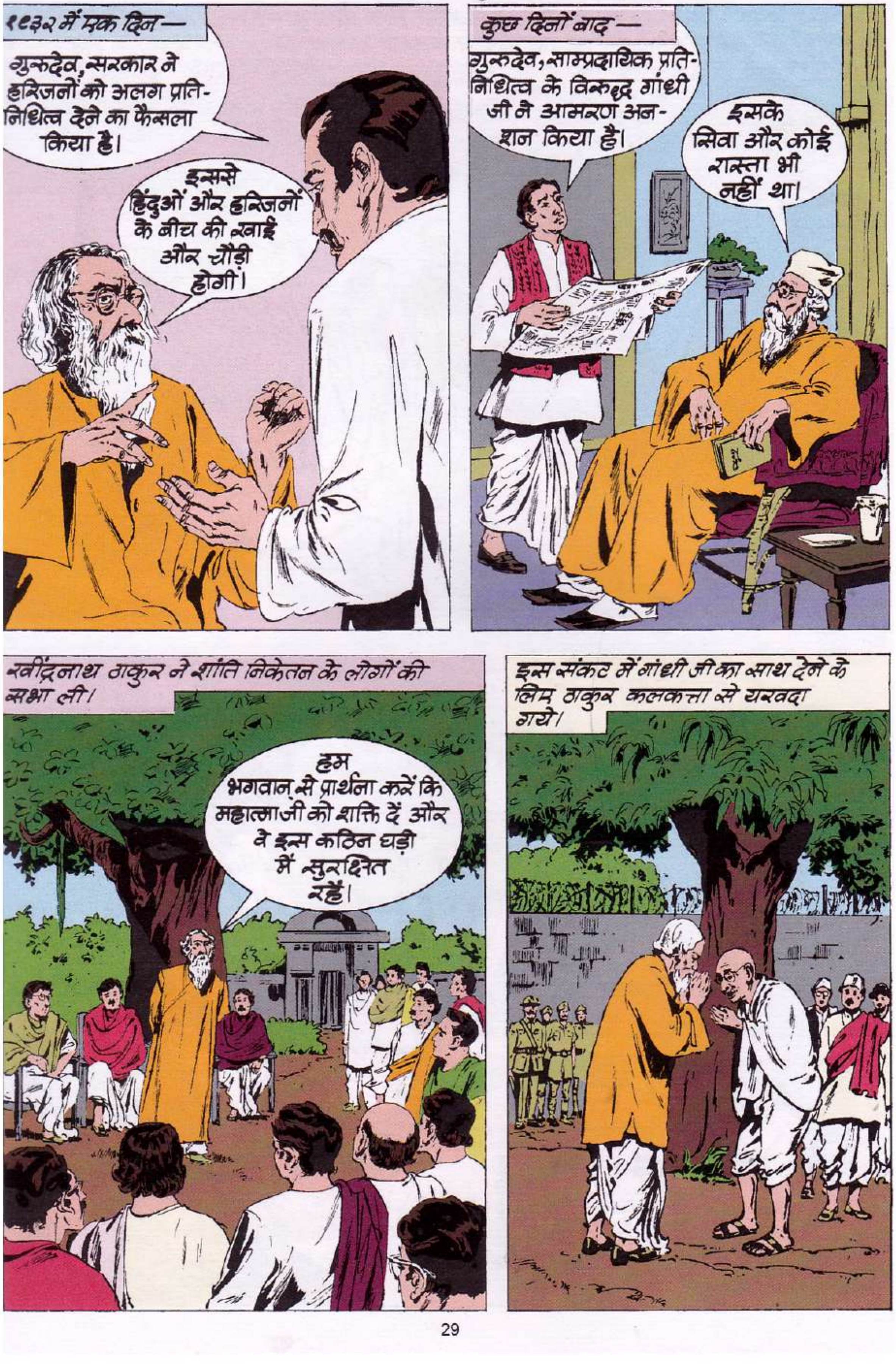
१९३२ में एक दिन —
गुरुदेव, सरकार ने हरिजनों को अलग प्रति-निधित्व देने का फैसला किया है।
इससे हिंदुओं और हरिजनों के बीच की खाई और चौड़ी होगी।
कुछ दिनों बाद —
गुरुदेव, साम्प्रदायिक प्रति-निधित्व के विरुद्ध गांधी जी ने आमरण अन-शन किया है।
इसके सिवा और कोई रास्ता भी नहीं था।
रवींद्रनाथ ठाकुर ने शांति निकेतन के लोगों की सभा ली।
हम भगवान् से प्रार्थना करें कि महात्माजी को शक्ति दें और वे इस कठिन घड़ी में सुरक्षित रहें।
इस संकट में गांधी जी का साथ देने के लिए ठाकुर कलकत्ता से यरवदा गये।

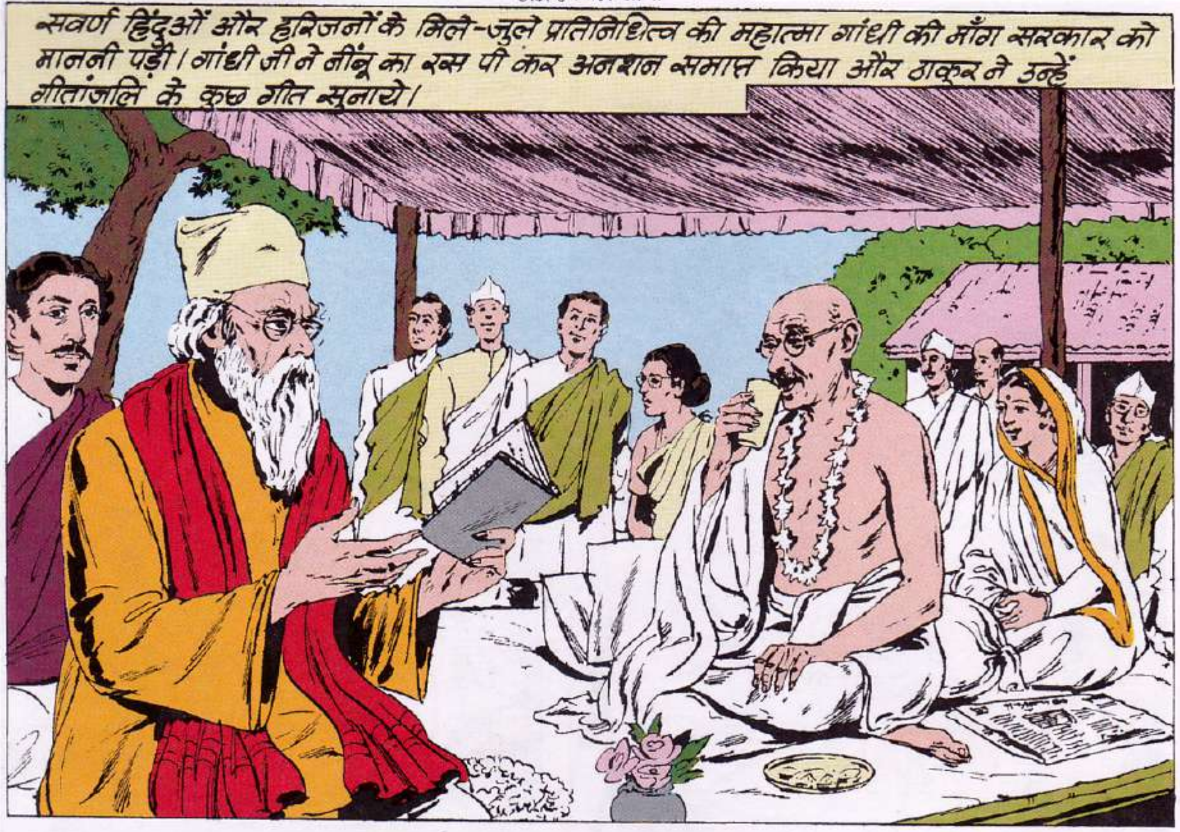
सवर्ण हिंदुओं और हरिजनों के मिले-जुले प्रतिनिधित्व की महात्मा गांधी की माँग सरकार को माननी पड़ी। गांधी जी ने नींबू का रस पी कर अनशन समाप्त किया और ठाकुर ने उन्हें गीतांजलि के कुछ गीत सुनाये।

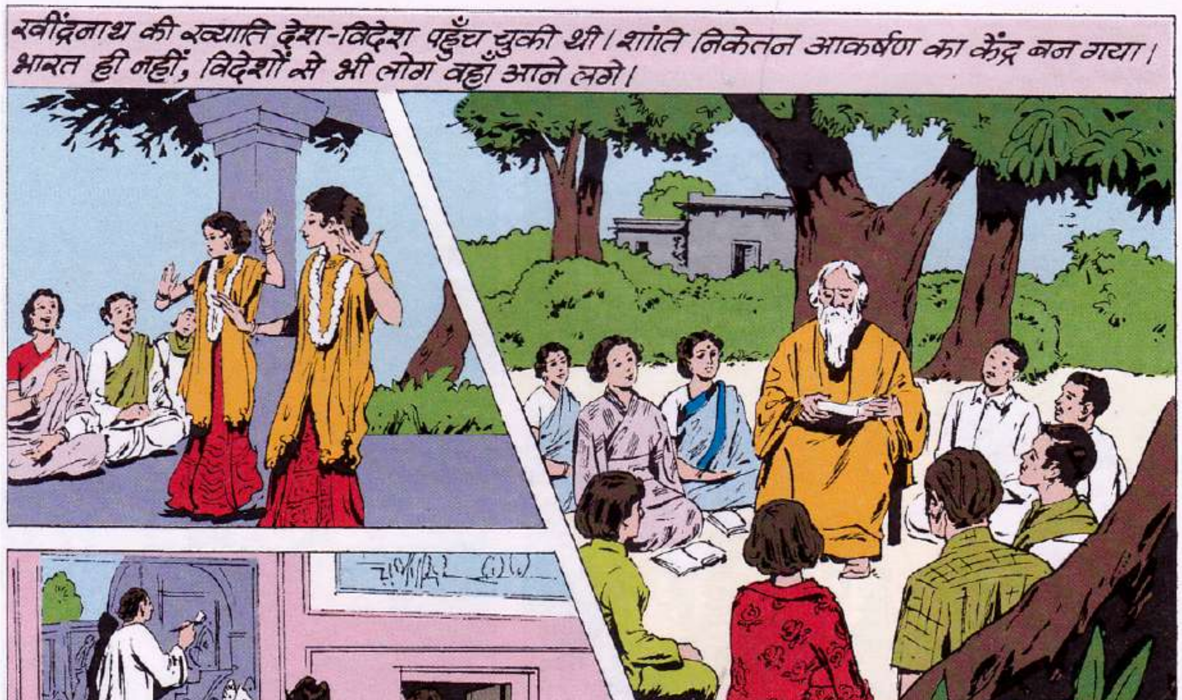
रवींद्रनाथ की ख्याति देश-विदेश पहुँच चुकी थी। शांति निकेतन आकर्षण का केंद्र बन गया। भारत ही नहीं, विदेशों से भी लोग वहाँ आने लगे।

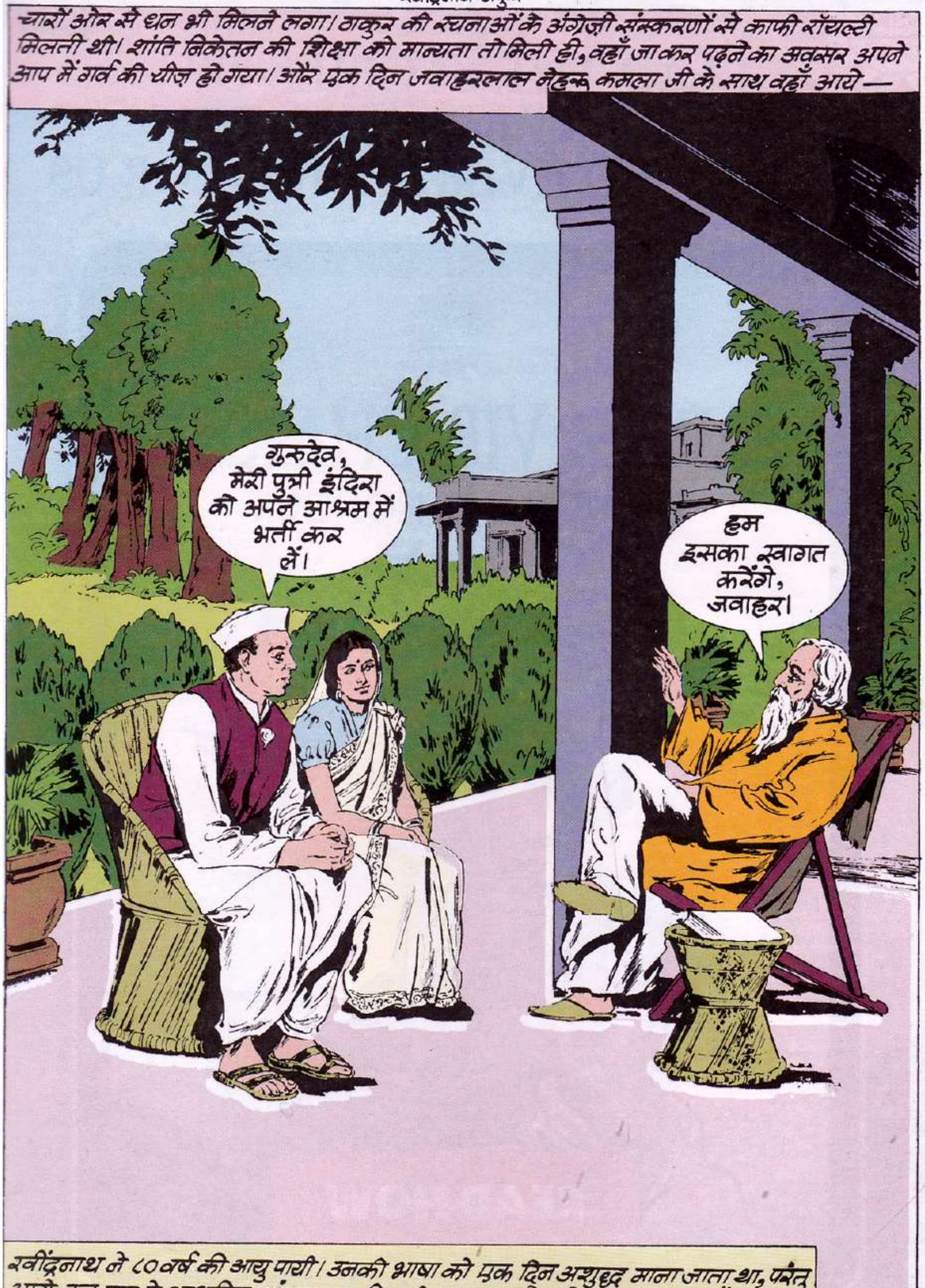
चारों ओर से धन भी मिलने लगा। ठाकुर की रचनाओं के अंग्रेज़ी संस्करणों से काफी रॉयल्टी मिलती थी। शांति निकेतन की शिक्षा को मान्यता तो मिली ही, वहाँ जा कर पढ़ने का अवसर अपने आप में गर्व की चीज़ हो गया। और एक दिन जवाहरलाल नेहरू कमला जी के साथ वहाँ आये—
गुरुदेव, मेरी पुत्री इंदिरा को अपने आश्रम में भर्ती कर लें।
हम इसका स्वागत करेंगे, जवाहर।
रवींद्रनाथ ने ८० वर्ष की आयु पायी। उनकी भाषा को एक दिन अशुद्ध माना जाता था, परंतु आगे चल कर वे आधुनिक बंगला साहित्य के जनक माने गये। उनकी रचनाएँ सारे संसार में लोकप्रिय हैं। उनके गीतों को युग-युग तक गाया जायेगा।

दिव्यदृष्टा

रवींद्रनाथ टैगोर

उन्होंने औपचारिक शिक्षा को अस्वीकार कर दिया और फिर भी एक विश्व प्रसिद्ध विश्वविद्यालय शुरू किया। उनकी बोलचाल की भाषा के लिए उनकी कविताओं का मज़ाक उड़ाया गया था, लेकिन उन्हें दो देशों द्वारा एंथम के रूप में अपनाया गया था। बंगाली समाज ने उन्हें तब तक निराश किया जब तक कि उन्हें साहित्य और एक नाइटहुड के लिए प्रतिष्ठित नोबेल पुरस्कार से सम्मानित नहीं किया गया! रवींद्रनाथ टैगोर, जिनकी बहुआयामी ज़िंदगी उतनी ही आकर्षक थी, जितनी प्रेरणादायक है, उनकी किताबों, उनके संगीत और उनके सजीव-उत्तेजक, अपरंपरागत आदर्शों पर चलती है।

अमर चित्र कथा के अन्य दिव्यदृष्टा :

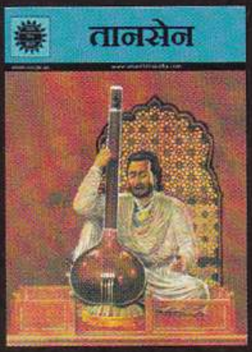

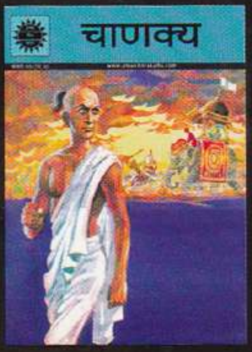

ये भी पढ़ें :

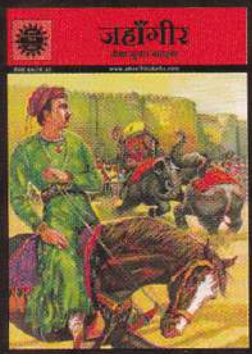

वीरांगना

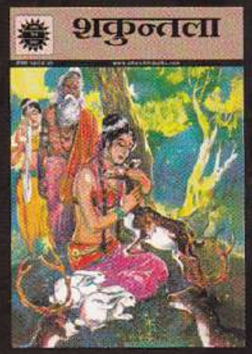

भारतीय उत्कृष्ट साहित्य

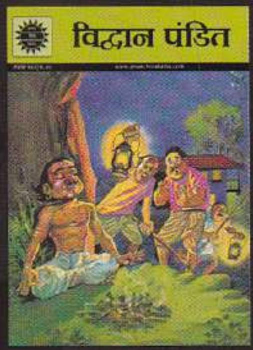

हास-परिहास और दंतकथाएँ

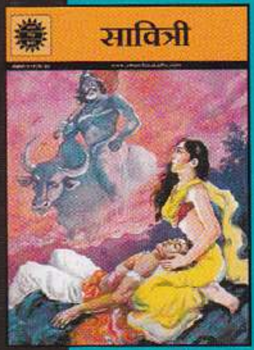

महाकाव्य और पौराणिक कथाएँ

www.amarchitrakatha.com ऑनलाइन पर खरीदें

ISBN 978-93-90055-66-1